يَعْتَذِرُوْنَ اِلَيْكُمْ اِذَا رَجَعْتُمْ اِلَيْهِمْ ؕ قُلْ

वो तुम्हारी तरफ उज़्र पेश करेंगे जब उन की तरफ लौट कर जाओगे। आप फरमा दीजिए के तुम

لَّا تَعْتَذِرُوْا لَنْ نُّؤْمِنَ لَكُمْ قَدْ نَبَّاَنَا اللّٰهُ مِنْ اَخْبَارِكُمْ ؕ

उज़्र मत पेश करो, हम तुम्हारी बात हरगिज़ नहीं मानेंगे, इस लिए के अल्लाह ने हमें तुम्हारी पोशीदा बातों की खबर दे दी है।

وَ سَيَرَى اللّٰهُ عَمَلَكُمْ وَ رَسُوْلُهٗ ثُمَّ تُرَدُّوْنَ

अनक़रीब अल्लाह और उस का रसूल तुम्हारा अमल देखेगा, फिर तुम लौटाए जाओगे

اِلٰى عٰلِمِ الْغَيْبِ وَ الشَّهَادَةِ فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ

पोशीदा और ज़ाहिर के जानने वाले अल्लाह की तरफ, फिर वो तुम्हें खबर देगा उन कामों की जो तुम

تَعْمَلُوْنَ ﴿٩٤﴾ سَيَحْلِفُوْنَ بِاللّٰهِ لَكُمْ اِذَا انْقَلَبْتُمْ

करते थे। अनक़रीब वो अल्लाह की कस्में खाएंगे तुम्हारे सामने जब तुम उन की तरफ पलट कर

اِلَيْهِمْ لِتُعْرِضُوْا عَنْهُمْ ؕ فَاَعْرِضُوْا عَنْهُمْ ؕ اِنَّهُمْ

जाओगे ताके तुम उन से ऐराज़ करो। इस लिए तुम उन से ऐराज़ करो। इस लिए के वो

رِجْسٌ ۪ وَّمَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ۚ جَزَآءًۢ بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿٩٥﴾

सरापा गन्दगी हैं। और उन का ठिकाना उन के कर्तूत की सज़ा में जहन्नम है।

يَحْلِفُوْنَ لَكُمْ لِتَرْضَوْا عَنْهُمْ ۚ فَاِنْ تَرْضَوْا عَنْهُمْ

वो तुम्हारे सामने कस्में खाते हैं ताके तुम उन से राज़ी हो जाओ। फिर अगर तुम उन से राज़ी हो भी जाओगे

فَاِنَّ اللّٰهَ لَا يَرْضٰى عَنِ الْقَوْمِ الْفٰسِقِيْنَ ﴿٩٦﴾ اَلْاَعْرَابُ

तब भी यक़ीनन अल्लाह नाफरमान क़ौम से राज़ी नहीं होंगे। अअराब

اَشَدُّ كُفْرًا وَّ نِفَاقًا وَّ اَجْدَرُ اَلَّا يَعْلَمُوْا حُدُوْدَ

ज़्यादा सख्त कुफ्र वाले और ज़्यादा सख्त निफाक़ वाले हैं और इस के ज़्यादा लाइक़ हैं के वो न समझें उस की हुदूद

مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ عَلٰى رَسُوْلِهٖ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿٩٧﴾

को जो अल्लाह ने अपने रसूल पर उतारी हैं। और अल्लाह इल्म वाले, हिक्मत वाले हैं।

وَمِنَ الْاَعْرَابِ مَنْ يَّتَّخِذُ مَا يُنْفِقُ مَغْرَمًا وَّ يَتَرَبَّصُ

और अअराब में से कुछ लोग वो हैं के जिसे वो खर्च करते हैं उसे तावान क़रार देते हैं और मुन्तज़िर रेहते

بِكُمُ الدَّوَآئِرَ ؕ عَلَيْهِمْ دَآئِرَةُ السَّوْءِ ؕ وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ

हैं तुम पर ज़माने की गर्दिशों के। बुरा वक़्त उन्ही पर पड़ने वाला है। और अल्लाह सुनने वाले,

عَلِيْمٌ ﴿٩٨﴾ وَمِنَ الْاَعْرَابِ مَنْ يُّؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ

इल्म वाले हैं। और अअराब में से कुछ वो हैं जो ईमान रखते हैं अल्लाह पर और आखिरी दिन

الْاٰخِرِ وَ يَتَّخِذُ مَا يُنْفِقُ قُرُبٰتٍ عِنْدَ اللّٰهِ وَ صَلَوٰتِ

पर और उन चीज़ों को जिसे वो खर्च करते हैं अल्लाह के यहाँ कुर्ब का ज़रिया समझते हैं और रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)

الرَّسُوْلِ ؕ اَلَاۤ اِنَّهَا قُرْبَةٌ لَّهُمْ ؕ سَيُدْخِلُهُمُ اللّٰهُ

की दुआ का ज़रिया समझते हैं। सुनो! यक़ीनन ये उन के लिए कुर्बत है। अनक़रीब अल्लाह उन्हें अपनी

فِيْ رَحْمَتِهٖ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٩٩﴾ وَالسّٰبِقُوْنَ ع ١٢

रहमत में दाखिल करेंगे। यक़ीनन अल्लाह बख्शने वाले, निहायत रहम वाले हैं। और पेहेल कर के

الْاَوَّلُوْنَ مِنَ الْمُهٰجِرِيْنَ وَالْاَنْصَارِ وَالَّذِيْنَ

सबक़त करने वाले मुहाजिरीन और अन्सार में से और उन में से

اتَّبَعُوْهُمْ بِاِحْسَانٍ ۙ رَّضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَرَضُوْا

जिन्हों ने उन का इत्तिबा किया नेकी में। अल्लाह उन से राज़ी हुवा और वो अल्लाह से राज़ी

عَنْهُ وَ اَعَدَّ لَهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ تَحْتَهَا الْاَنْهٰرُ

हुए और अल्लाह ने उन के लिए जन्नतें तय्यार कर रखी हैं जिन के नीचे से नेहरें बेहती होंगी

خٰلِدِيْنَ فِيْهَاۤ اَبَدًا ؕ ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ﴿١٠٠﴾ وَمِمَّنْ

जिन में वो हमेशा रहेंगे। ये भारी कामयाबी है। और उन अअराब में से भी

حَوْلَكُمْ مِّنَ الْاَعْرَابِ مُنٰفِقُوْنَ ۛؕ وَمِنْ اَهْلِ الْمَدِيْنَةِ ۛؔ

जो तुम्हारे इर्द गिर्द हैं उन में से भी मुनाफ़िक़ हैं और एहले मदीना में से।

مَرَدُوْا عَلَى النِّفَاقِ ۟ لَا تَعْلَمُهُمْ ؕ نَحْنُ نَعْلَمُهُمْ ؕ

कुछ निफाक़ में बहोत आगे निकल गए हैं, जिन को आप नहीं जानते। हम उन्हें जानते हैं।

سَنُعَذِّبُهُمْ مَّرَّتَيْنِ ثُمَّ يُرَدُّوْنَ اِلٰى عَذَابٍ عَظِيْمٍ ﴿١٠١﴾

अनक़रीब हम उन्हें दुगनी सज़ा देंगे, फिर वो भारी अज़ाब की तरफ लौटाए जाएंगे।

وَاٰخَرُوْنَ اعْتَرَفُوْا بِذُنُوْبِهِمْ خَلَطُوْا عَمَلًا صَالِحًا

और दूसरे वो हैं जिन्हों ने अपने गुनाहों का ऐतेराफ किया जिन्हों ने आमाले सालिहा और दूसरे बुरे

وَّاٰخَرَ سَيِّئًا ؕ عَسَى اللّٰهُ اَنْ يَّتُوْبَ عَلَيْهِمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ

कामों को खलत मलत कर दिया। उम्मीद है के अल्लाह उन की तौबा क़बूल करेंगे। यक़ीनन अल्लाह

غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٠٢﴾ خُذْ مِنْ اَمْوَالِهِمْ صَدَقَةً تُطَهِّرُهُمْ

बख़्शने वाले, निहायत रहम वाले हैं। आप उन के माल में से सदक़ा लीजिए जो उन्हें पाक करे

وَ تُزَكِّيْهِمْ بِهَا وَصَلِّ عَلَيْهِمْ ؕ اِنَّ صَلٰوتَكَ سَكَنٌ

और उन का तज़किया करे और आप उन के लिए दुआए रहमत कीजिए। यक़ीनन आप की दुआ उन के लिए सुकून का

لَّهُمْ ؕ وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿١٠٣﴾ اَلَمْ يَعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ

बाइस है। और अल्लाह सुनने वाले, इल्म वाले हैं। क्या वो जानते नहीं के अल्लाह

هُوَ يَقْبَلُ التَّوْبَةَ عَنْ عِبَادِهٖ وَيَاْخُذُ الصَّدَقٰتِ

आप अपने बन्दों की तरफ से तौबा क़बूल करते हैं और सदक़ात क़बूल फरमाते हैं

وَاَنَّ اللّٰهَ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ ﴿١٠٤﴾ وَقُلِ اعْمَلُوْا فَسَيَرَى

और ये के अल्लाह ही तौबा क़बूल करने वाले, निहायत रहम वाले हैं। और आप केह दीजिए के तुम अमल करते रहो,

اللّٰهُ عَمَلَكُمْ وَرَسُوْلُهٗ وَالْمُؤْمِنُوْنَ ؕ وَ سَتُرَدُّوْنَ

अनक़रीब तुम्हारा अमल अल्लाह और उस का रसूल और ईमान वाले देखेंगे। और अनक़रीब तुम लौटाए जाओगे

اِلٰى عٰلِمِ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ

पोशीदा और ज़ाहिर के जानने वाले की तरफ, फिर वो तुम्हें खबर देगा उन कामों की

تَعْمَلُوْنَ ﴿١٠٥﴾ وَاٰخَرُوْنَ مُرْجَوْنَ لِاَمْرِ اللّٰهِ

जो तुम करते थे। और दूसरे वो हैं जिन का मुआमला अल्लाह का हुक्म आने तक मुल्तवी है,

اِمَّا يُعَذِّبُهُمْ وَاِمَّا يَتُوْبُ عَلَيْهِمْ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ

या अल्लाह उन को अज़ाब दे या उन की तौबा क़बूल करे। और अल्लाह इल्म वाले,

حَكِيْمٌ ﴿١٠٦﴾ وَالَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا مَسْجِدًا ضِرَارًا وَّكُفْرًا

हिक्मत वाले हैं। और वो लोग जिन्हों ने मस्जिद बनाई इस्लाम को नुक़सान पहोंचाने के लिए और कुफ्र के लिए

وَّتَفْرِيْقًاۢ بَيْنَ الْمُؤْمِنِيْنَ وَاِرْصَادًا لِّمَنْ حَارَبَ

और ईमान वालों के दरमियान तफरक़ा डालने के लिए और उस शख़्स के घात लगाने में जो अल्लाह और उस के

اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ مِنْ قَبْلُ ؕ وَلَيَحْلِفُنَّ اِنْ اَرَدْنَآ

रसूल के साथ पेहले से जंग कर रहा है। और ये लोग कस्में खा कर केहते हैं के हम ने तो सिर्फ

اِلَّا الْحُسْنٰى ؕ وَاللّٰهُ يَشْهَدُ اِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ﴿١٠٧﴾ لَا تَقُمْ

भलाई का इरादा किया है। हालांके अल्लाह गवाही देते हैं के यक़ीनन ये झूठे हैं। आप उस मस्जिद में

فِيْهِ اَبَدًا ؕ لَمَسْجِدٌ اُسِّسَ عَلَى التَّقْوٰى مِنْ اَوَّلِ

कभी भी खड़े न हों। अलबत्ता वो मस्जिद जिस की बुन्याद तक़्वा पर रखी गई है पेहले

يَوْمٍ اَحَقُّ اَنْ تَقُوْمَ فِيْهِ ؕ فِيْهِ رِجَالٌ يُّحِبُّوْنَ

दिन से वो इस की ज़्यादा मुस्तहिक़ है के आप उस में खड़े हों। (इस लिए के) उस में ऐसे मर्द हैं

اَنْ يَّتَطَهَّرُوْا ؕ وَاللّٰهُ يُحِبُّ الْمُطَّهِّرِيْنَ ۝۱۰۸ اَفَمَنْ اَسَّسَ

जो पाक रेहना पसन्द करते हैं। और अल्लाह भी पाक रेहने वालों को पसन्द करते हैं। क्या फिर वो शख्स जिस ने

بُنْيَانَهٗ عَلٰى تَقْوٰى مِنَ اللّٰهِ وَرِضْوَانٍ خَيْرٌ اَمْ مَّنْ

मस्जिद की बुन्याद अल्लाह की खशीयत और उस की रिज़ा पर रखी है वो ज़्यादा बेहतर है या वो

اَسَّسَ بُنْيَانَهٗ عَلٰى شَفَا جُرُفٍ هَارٍ فَانْهَارَ بِهٖ

जिस ने उस की बुन्याद गिरने वाली खाई के किनारे पर रखी हो जो उसे ले कर

فِيْ نَارِ جَهَنَّمَ ؕ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ۝۱۰۹

जहन्नम की आग में गिर जाए। और अल्लाह ज़ालिम क़ौम को हिदायत नहीं देते।

لَا يَزَالُ بُنْيَانُهُمُ الَّذِيْ بَنَوْا رِيْبَةً فِيْ قُلُوْبِهِمْ

उन की बनाई हुई तामीर बराबर उन के दिलों में शक (का कांटा) बनी रहेगी

اِلَّاۤ اَنْ تَقَطَّعَ قُلُوْبُهُمْ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ۝۱۱۰ اِنَّ اللّٰهَ ع ۱۳ ۲

यहां तक के उन के दिल टुकड़े टुकड़े हो जाएं। और अल्लाह इल्म वाले, हिक्मत वाले हैं। यक़ीनन अल्लाह

اشْتَرٰى مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ اَنْفُسَهُمْ وَ اَمْوَالَهُمْ

ने ईमान वालों से खरीद लीं उन की जानें और उन के माल

بِاَنَّ لَهُمُ الْجَنَّةَ ؕ يُقَاتِلُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ فَيَقْتُلُوْنَ

इस के इवज़ के उन के लिए जन्नत है। वो अल्लाह के रास्ते में क़िताल करते हैं, फिर क़त्ल करते हैं

وَ يُقْتَلُوْنَ ۫ وَعْدًا عَلَيْهِ حَقًّا فِى التَّوْرٰىةِ وَالْاِنْجِيْلِ

और क़त्ल होते हैं। ये अल्लाह के ज़िम्मे सच्चा वादा है तौरात और इन्जील

وَالْقُرْاٰنِ ؕ وَمَنْ اَوْفٰى بِعَهْدِهٖ مِنَ اللّٰهِ فَاسْتَبْشِرُوْا

और कुरआन में। और कौन है अल्लाह से बढ़ कर अपने अहद को पूरा करने वाला? तो तुम खुश हो जाओ

بِبَيْعِكُمُ الَّذِيْ بَايَعْتُمْ بِهٖ ؕ وَذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ

अपने उस सौदे पर जो तुम ने किया है। और ये भारी

الْعَظِيْمُ ﴿١١١﴾ اَلتَّآئِبُوْنَ الْعٰبِدُوْنَ الْحٰمِدُوْنَ

कामयाबी है। जो तौबा करने वाले हैं, इबादत करने वाले हैं, हम्द करने वाले हैं,

السَّآئِحُوْنَ الرّٰكِعُوْنَ السّٰجِدُوْنَ الْاٰمِرُوْنَ

जिहाद करने वाले हैं, रूकूअ करने वाले हैं, सज्दा करने वाले हैं, अम्र

بِالْمَعْرُوْفِ وَالنَّاهُوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَالْحٰفِظُوْنَ

बिल मारूफ और नही अनिल मुन्कर करने वाले हैं और अल्लाह की हुदूद की

لِحُدُوْدِ اللّٰهِ ؕ وَ بَشِّرِ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١١٢﴾ مَا كَانَ لِلنَّبِيِّ

हिफाज़त करने वाले हैं। और ईमान वालों को बशारत सुना दीजिए। नबी के लिए

وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَنْ يَّسْتَغْفِرُوْا لِلْمُشْرِكِيْنَ وَلَوْ كَانُوْٓا

और ईमान वालों के लिए मुनासिब नहीं हैं के वो इस्तिग़फार करें मुशरिकीन के लिए अगर्चे वो

اُولِيْ قُرْبٰى مِنْۢ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمْ اَنَّهُمْ اَصْحٰبُ

रिश्तेदार क्यूं न हों इस के बाद के उन के लिए वाज़ेह हो गया के वो दोज़खी

الْجَحِيْمِ ﴿١١٣﴾ وَمَا كَانَ اسْتِغْفَارُ اِبْرٰهِيْمَ لِاَبِيْهِ

हैं। और इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) का इस्तिग़फार अपने अब्बा के लिए नहीं था मगर एक वादे की वजह

اِلَّا عَنْ مَّوْعِدَةٍ وَّعَدَهَآ اِيَّاهُ ۚ فَلَمَّا تَبَيَّنَ لَهٗٓ اَنَّهٗ

से जो उन्हों ने उन से किया था। लेकिन जब इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) के सामने वाज़ेह हो गया के ये अल्लाह का दुश्मन है तो

عَدُوٌّ لِّلّٰهِ تَبَرَّاَ مِنْهُ ؕ اِنَّ اِبْرٰهِيْمَ لَاَوَّاهٌ حَلِيْمٌ ﴿١١٤﴾

उस से उन्हों ने बराअत कर ली। यक़ीनन इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) बहोत ज़्यादा अल्लाह की तरफ रूजूअ होने वाले, हिल्म वाले थे।

وَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيُضِلَّ قَوْمًاۢ بَعْدَ اِذْ هَدٰىهُمْ

और अल्लाह ऐसा नहीं है के किसी क़ौम को गुमराह करे उन्हें हिदायत देने के बाद

حَتّٰى يُبَيِّنَ لَهُمْ مَّا يَتَّقُوْنَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ﴿١١٥﴾

जब तक उन पर वाज़ेह न कर दे के किन बातों से उन्हें बचना है। यक़ीनन अल्लाह हर चीज़ को खूब जानने वाले हैं।

اِنَّ اللّٰهَ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ يُحْيٖ وَيُمِيْتُ ؕ

यक़ीनन अल्लाह ही के लिए आसमानों और ज़मीनों की सलतनत है। वो ज़िन्दा करता है और मौत देता है।

وَمَا لَكُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ وَّلِيٍّ وَّلَا نَصِيْرٍ ﴿١١٦﴾ لَقَدْ

और तुम्हारे लिए अल्लाह के अलावा कोई कारसाज़ और मददगार नहीं है। यक़ीनन

تَّابَ اللّٰهُ عَلَى النَّبِيِّ وَالْمُهٰجِرِيْنَ وَالْاَنْصَارِ الَّذِيْنَ

अल्लाह ने तवज्जुह फरमाई नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) पर और मुहाजिरीन और अन्सार पर जिन्हों ने

اتَّبَعُوْهُ فِيْ سَاعَةِ الْعُسْرَةِ مِنْۢ بَعْدِ مَا كَادَ يَزِيْغُ

आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का साथ दिया तंगी की घड़ी में इस के बाद के उन में से एक जमाअत

قُلُوْبُ فَرِيْقٍ مِّنْهُمْ ثُمَّ تَابَ عَلَيْهِمْ ؕ اِنَّهٗ بِهِمْ رَءُوْفٌ

के दिल मुतज़लज़िल होने लगे, फिर अल्लाह उन पर महरबान हुवा। यक़ीनन वो उन पर महरबान,

رَّحِيْمٌ ﴿۱۱۷﴾ وَّ عَلَى الثَّلٰثَةِ الَّذِيْنَ خُلِّفُوْا ؕ

निहायत रहम वाला है। और (यक़ीनन तौबा क़बूल की) उन तीन सहाबा की जिन का मुआमला मुल्तवी छोड़ दिया गया।

حَتّٰۤى اِذَا ضَاقَتْ عَلَيْهِمُ الْاَرْضُ بِمَا رَحُبَتْ وَضَاقَتْ

यहां तक के जब उन पर ज़मीन तंग हो गई अपनी वुस्अत के बावजूद और उन पर

عَلَيْهِمْ اَنْفُسُهُمْ وَظَنُّوْۤا اَنْ لَّا مَلْجَاَ مِنَ اللّٰهِ

उन की जानें तंग हो गईं और उन्हों ने समझा के अल्लाह से कोई छुपने की जगह नहीं

اِلَّاۤ اِلَيْهِ ؕ ثُمَّ تَابَ عَلَيْهِمْ لِيَتُوْبُوْا ؕ اِنَّ اللّٰهَ هُوَ التَّوَّابُ

मगर उसी के पास। फिर अल्लाह ने उन की तौबा क़बूल की ताके वो तौबा करते रहें। यक़ीनन अल्लाह तौबा क़बूल करने वाला

الرَّحِيْمُ ﴿۱۱۸﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَكُوْنُوْا ع ١٦

निहायत रहम वाला है। ऐ ईमान वालो! अल्लाह से डरो और सच्चों

مَعَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿۱۱۹﴾ مَا كَانَ لِاَهْلِ الْمَدِيْنَةِ وَمَنْ

के साथ रहो। एहले मदीना के लिए और उन अअराब के लिए जो उन के

حَوْلَهُمْ مِّنَ الْاَعْرَابِ اَنْ يَّتَخَلَّفُوْا عَنْ رَّسُوْلِ اللّٰهِ

इर्द गिर्द हैं ये मुनासिब नहीं है के वो अल्लाह के रसूल से पीछे रहें

وَلَا يَرْغَبُوْا بِاَنْفُسِهِمْ عَنْ نَّفْسِهٖ ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ

और आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की ज़ाते आली को छोड़ कर के अपनी जानों से रग़बत रखें। ये इस वजह से के

لَا يُصِيْبُهُمْ ظَمَاٌ وَّلَا نَصَبٌ وَّلَا مَخْمَصَةٌ فِيْ سَبِيْلِ

उन्हें लगती नहीं प्यास और थकावट और भूक अल्लाह के

اللّٰهِ وَلَا يَطَـُٔوْنَ مَوْطِئًا يَّغِيْظُ الْكُفَّارَ وَلَا يَنَالُوْنَ

रास्ते में और वो नहीं रौंदते किसी चलने की जगह को जो कुफ्फार को ग़ुस्सा दिलाती हो और वो नहीं छीनते

مِنْ عَدُوٍّ نَّيْلًا اِلَّا كُتِبَ لَهُمْ بِهٖ عَمَلٌ صَالِحٌ ؕ

दुश्मन से कोई चीज़ मगर उन के लिए उस के इवज़ अमले सालेह लिखा जाता है।

اِنَّ اللّٰهَ لَا يُضِيْعُ اَجْرَ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿١٢٠﴾ وَلَا يُنْفِقُوْنَ

यक़ीनन अल्लाह नेकी करने वालों का अज्र ज़ायेअ नहीं करते। और वो खर्च नहीं करते

نَفَقَةً صَغِيْرَةً وَّلَا كَبِيْرَةً وَّلَا يَقْطَعُوْنَ وَادِيًا

कोई छोटा खर्च और न बड़ा खर्च और न किसी वादी को क़तअ करते हैं

اِلَّا كُتِبَ لَهُمْ لِيَجْزِيَهُمُ اللّٰهُ اَحْسَنَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٢١﴾

मगर उन के लिए वो लिखा जाता है ताके अल्लाह उन्हें बदला दे उन अच्छे कामों का जो वो करते थे।

وَمَا كَانَ الْمُؤْمِنُوْنَ لِيَنْفِرُوْا كَآفَّةً ؕ فَلَوْلَا نَفَرَ

और ईमान वालों के लिए मुनासिब नहीं है के वो सारे के सारे निकल खड़े हों। फिर ऐसा क्यूं नहीं करते

مِنْ كُلِّ فِرْقَةٍ مِّنْهُمْ طَآئِفَةٌ لِّيَتَفَقَّهُوْا فِى الدِّيْنِ

के उन की हर बड़ी जमाअत में से एक गिरोह निकले ताके दीन की समझ हासिल करे

وَ لِيُنْذِرُوْا قَوْمَهُمْ اِذَا رَجَعُوْٓا اِلَيْهِمْ لَعَلَّهُمْ

और ताके अपनी क़ौम को डराए जब उन की तरफ वापस लौटे, हो सकता है के वो

يَحْذَرُوْنَ ﴿١٢٢﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا قَاتِلُوا الَّذِيْنَ ع

मुतनब्बेह हो जाएं। ऐ ईमान वालो! तुम क़िताल करो उन

يَلُوْنَكُمْ مِّنَ الْكُفَّارِ وَلْيَجِدُوْا فِيْكُمْ غِلْظَةً ؕ وَاعْلَمُوْٓا

कुफ्फार से जो तुम्हारे क़रीब हैं और चाहिए के वो तुम में शिद्दत को महसूस करें। और तुम जान लो

اَنَّ اللّٰهَ مَعَ الْمُتَّقِيْنَ ﴿١٢٣﴾ وَاِذَا مَآ اُنْزِلَتْ سُوْرَةٌ فَمِنْهُمْ ع

के अल्लाह मुत्तक़ियों के साथ है। और जब भी कोई सूरत उतारी जाती है तो उन में से कुछ लोग

مَّنْ يَّقُوْلُ اَيُّكُمْ زَادَتْهُ هٰذِهٖٓ اِيْمَانًا ۚ فَاَمَّا الَّذِيْنَ

ऐसे हैं जो केहते हैं के तुम में से किस के ईमान को इस सूरत ने ज़्यादा कर दिया? फिर अलबत्ता जो

اٰمَنُوْا فَزَادَتْهُمْ اِيْمَانًا وَّهُمْ يَسْتَبْشِرُوْنَ ﴿١٢٤﴾

ईमान वाले हैं तो ये सूरत उन्हें ईमान में बढ़ाती है और वो उस से खुश होते हैं।

وَاَمَّا الَّذِيْنَ فِىْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ فَزَادَتْهُمْ رِجْسًا اِلٰى

और अलबत्ता जिन के दिलों में मर्ज़ है, तो इस सूरत ने उन की गन्दगी के साथ गन्दगी

رِجْسِهِمْ وَمَاتُوْا وَهُمْ كٰفِرُوْنَ ﴿١٢٥﴾ اَوَلَا يَرَوْنَ

और बढ़ा दी और वो मरते हैं इस हाल में के वो काफिर होते हैं। क्या वो देखते नहीं हैं

اَنَّهُمْ يُفْتَنُوْنَ فِيْ كُلِّ عَامٍ مَّرَّةً اَوْ مَرَّتَيْنِ ثُمَّ

के उन्हें आज़माइश में डाला जाता है हर साल एक मरतबा या दो मरतबा, फिर भी

لَا يَتُوْبُوْنَ وَلَا هُمْ يَذَّكَّرُوْنَ ﴿١٢٦﴾ وَاِذَا مَآ اُنْزِلَتْ سُوْرَةٌ

न वो तौबा करते हैं और न नसीहत पकड़ते हैं। और जब कोई सूरत उतारी जाती है

نَّظَرَ بَعْضُهُمْ اِلٰى بَعْضٍ ؕ هَلْ يَرٰىكُمْ مِّنْ اَحَدٍ

तो उन में से एक दूसरे की तरफ देखते हैं के क्या तुम्हें किसी ने देखा तो नहीं?

ثُمَّ انْصَرَفُوْا ؕ صَرَفَ اللّٰهُ قُلُوْبَهُمْ بِاَنَّهُمْ قَوْمٌ

फिर वो सरक जाते हैं। अल्लाह ने उन के दिलों को फेर दिया इस वजह से के वो ऐसी क़ौम है

لَّا يَفْقَهُوْنَ ﴿١٢٧﴾ لَقَدْ جَآءَكُمْ رَسُوْلٌ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ عَزِيْزٌ

जो समझती नहीं। यक़ीनन तुम्हारे पास रसूल आए तुम ही में से जिन पर भारी है वो

عَلَيْهِ مَا عَنِتُّمْ حَرِيْصٌ عَلَيْكُمْ بِالْمُؤْمِنِيْنَ رَءُوْفٌ

चीज़ जो तुम्हें मशक़्क़त में डाले, वो तुम पर हरीस हैं, ईमान वालों के साथ बहोत ज़्यादा महरबान, निहायत

رَّحِيْمٌ ﴿١٢٨﴾ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَقُلْ حَسْبِيَ اللّٰهُ ۖ لَآ اِلٰهَ

रहम वाले हैं। फिर अगर वो ऐराज़ करें तो आप फरमा दीजिए के मुझे अल्लाह काफी है। उस के सिवा कोई

اِلَّا هُوَ ؕ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَهُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ ﴿١٢٩﴾ ع ١٦

माबूद नहीं। उसी पर मैं ने तवक्कुल किया और वो अर्शे अज़ीम का रब है।

رُكُوْعَاتُهَا ١١ (١٠) سُوْرَةُ يُوْنُسَ مَكِّيَّةٌ (٥١) اٰيَاتُهَا ١٠٩

और ११ रूकूअ हैं सूरह यूनुस मक्का में नाज़िल हुई उस में १०९ आयतें हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

الٓرٰ ۚ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ الْحَكِيْمِ ﴿١﴾ اَكَانَ لِلنَّاسِ

अलिफ लाम रॉ। ये हिकमत वाली किताब की आयतें हैं। क्या लोगों के लिए ये बात

عَجَبًا اَنْ اَوْحَيْنَآ اِلٰى رَجُلٍ مِّنْهُمْ اَنْ اَنْذِرِ النَّاسَ

बाइसे तअज्जुब हुई के हम ने उन्ही में से एक शख़्स की तरफ वही की के लोगों को डराओ

وَقْفُ النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

وَ بَشِّرِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَنَّ لَهُمْ قَدَمَ صِدْقٍ

और ईमान वालों को बशारत सुनाओ इस बात की के उन के लिए उन के रब के पास पूरा

عِنْدَ رَبِّهِمْ ؕ قَالَ الْكٰفِرُوْنَ اِنَّ هٰذَا لَسٰحِرٌ مُّبِيْنٌ ۝٢

मरतबा है। काफिरों ने कहा के यक़ीनन ये साफ जादूगर है।

اِنَّ رَبَّكُمُ اللّٰهُ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ

यक़ीनन तुम्हारा रब वो अल्लाह है जिस ने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया

فِيْ سِتَّةِ اَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ يُدَبِّرُ الْاَمْرَ ؕ

छे दिन में, फिर वो अर्श मर मुस्तवी हुवा, वही तमाम उमूर की तदबीर करता है।

مَا مِنْ شَفِيْعٍ اِلَّا مِنْۢ بَعْدِ اِذْنِهٖ ؕ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ

कोई सिफारिश करने वाला नहीं मगर उस की इजाज़त के बाद। यही अल्लाह तुम्हारा रब है,

فَاعْبُدُوْهُ ؕ اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ۝٣ اِلَيْهِ مَرْجِعُكُمْ جَمِيْعًا ؕ

तो उसी की इबादत करो। क्या फिर तुम नसीहत हासिल नहीं करते? उसी की तरफ तुम सब को लौट कर जाना है।

وَعْدَ اللّٰهِ حَقًّا ؕ اِنَّهٗ يَبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ لِيَجْزِيَ

ये अल्लाह का बरहक़ वादा है। यक़ीनन वही मखलूक़ को पेहली मरतबा पैदा करता है, फिर वही उस को दोबारा पैदा करेगा ताके

الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ بِالْقِسْطِ ؕ وَالَّذِيْنَ

वो इन्साफ से बदला दे उन लोगों को जो ईमान लाए और जो नेक काम करते रहे। और

كَفَرُوْا لَهُمْ شَرَابٌ مِّنْ حَمِيْمٍ وَّ عَذَابٌ اَلِيْمٌۢ بِمَا كَانُوْا

काफिरों के लिए खौलता हुवा पानी पीने को मिलेगा और दर्दनाक अज़ाब होगा इस वजह से के वो

يَكْفُرُوْنَ ۝٤ هُوَ الَّذِيْ جَعَلَ الشَّمْسَ ضِيَآءً وَّالْقَمَرَ

कुफ्र करते थे। वही अल्लाह है जिस ने सूरज को रोशन बनाया और चाँद को

نُوْرًا وَّ قَدَّرَهٗ مَنَازِلَ لِتَعْلَمُوْا عَدَدَ السِّنِيْنَ

नूरानी बनाया और उसी ने उस की मन्ज़िलों की मिक़दार मुतअय्यन की ताके तुम सालों की गिन्ती और हिसाब

وَالْحِسَابَ ؕ مَا خَلَقَ اللّٰهُ ذٰلِكَ اِلَّا بِالْحَقِّ ۚ يُفَصِّلُ

मालूम करो। उस को अल्लाह ने नहीं बनाया मगर फाइदे के साथ। वो तमाम आयतों की

الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ۝٥ اِنَّ فِي اخْتِلَافِ الَّيْلِ

तफसील करता है ऐसी क़ौम के लिए जो समझ रखती है। यक़ीनन रात और दिन के आने

وَالنَّهَارِ وَمَا خَلَقَ اللّٰهُ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ لَاٰيٰتٍ

जाने में और उन चीज़ों के पैदा करने में जिस को अल्लाह ने आसमानों और ज़मीन में पैदा किया अलबत्ता निशानियाँ

لِّقَوْمٍ يَّتَّقُوْنَ ۝٦ اِنَّ الَّذِيْنَ لَا يَرْجُوْنَ لِقَآءَنَا وَرَضُوْا

हैं ऐसी क़ौम के लिए जो डरती है। यक़ीनन वो लोग जो हमारे मिलने की उम्मीद नहीं रखते और जिन्हों ने दुन्यवी

بِالْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَاطْمَاَنُّوْا بِهَا وَالَّذِيْنَ هُمْ عَنْ اٰيٰتِنَا

ज़िन्दगी को पसन्द कर लिया है और उस पर मुतमइन हैं और जो हमारी आयतों से

غٰفِلُوْنَ ۝٧ اُولٰٓئِكَ مَاْوٰىهُمُ النَّارُ بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ۝٨

ग़ाफिल हैं। उन का ठिकाना दोज़ख है उन आमाल की वजह से जो वो कर रहे हैं।

اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ يَهْدِيْهِمْ رَبُّهُمْ

यक़ीनन वो लोग जो ईमान लाए और जो नेक काम करते रहे उन को उन का रब उन के ईमान की वजह से

بِاِيْمَانِهِمْ ۚ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهِمُ الْاَنْهٰرُ فِيْ جَنّٰتِ

हिदायत देगा। उन के नीचे से नेहरें बेहती होंगी जन्नाते नईम

النَّعِيْمِ ۝٩ دَعْوٰىهُمْ فِيْهَا سُبْحٰنَكَ اللّٰهُمَّ وَ تَحِيَّتُهُمْ

में। उन की पुकार उन में होगी "سُبْحٰنَكَ اللّٰهُمَّ" (ऐ अल्लाह! तेरी ज़ात पाक है) और उन का तहीय्या

فِيْهَا سَلٰمٌ ۚ وَاٰخِرُ دَعْوٰىهُمْ اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ

उन में सलाम होगा। और उन की आखिरी दुआ उन में ये होगी के "اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ

الْعٰلَمِيْنَ ۝١٠ وَلَوْ يُعَجِّلُ اللّٰهُ لِلنَّاسِ الشَّرَّ اسْتِعْجَالَهُمْ ع

الْعٰلَمِيْنَ"। और अगर अल्लाह इन्सानों के लिए बुराई (अज़ाब) में जल्दी करे, उन के भलाई में जल्दी

بِالْخَيْرِ لَقُضِيَ اِلَيْهِمْ اَجَلُهُمْ ؕ فَنَذَرُ الَّذِيْنَ

करने की तरह तो उन की अजल आ चुकी होती। इस लिए हम उन लोगों को जो हम से

لَا يَرْجُوْنَ لِقَآءَنَا فِيْ طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُوْنَ ۝١١ وَاِذَا مَسَّ

मिलने की उम्मीद नहीं रखते उन को उन की सरकशी में सरगरदाँ छोड़ रहे हैं। और जब इन्सान

الْاِنْسَانَ الضُّرُّ دَعَانَا لِجَنْۢبِهٖۤ اَوْ قَاعِدًا اَوْ قَآئِمًا ۚ

को तकलीफ पहोंचती है तो वो हमें पुकारता है अपने पेहलू पर लेटे या बैठे हुए या खड़े हो कर।

فَلَمَّا كَشَفْنَا عَنْهُ ضُرَّهٗ مَرَّ كَاَنْ لَّمْ يَدْعُنَاۤ اِلٰى

फिर जब हम उस से उस की तकलीफ दूर कर देते हैं तो ऐसे आगे बढ़ जाता है जैसा के उस ने हमें पुकारा ही नहीं था किसी तकलीफ

ضُرٍّ مَّسَّهٗ ؕ كَذٰلِكَ زُيِّنَ لِلْمُسْرِفِيْنَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٢﴾

की वजह से जो उसे पहोंची थी। इसी तरह इसराफ करने वालों के लिए मुज़य्यन किए गए वो आमाल जो वो कर रहे हैं।

وَلَقَدْ اَهْلَكْنَا الْقُرُوْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ لَمَّا ظَلَمُوْا ۙ

और यक़ीनन हम ने तुम से पेहली क़ौमों को हलाक किया जब उन्हों ने ज़ुल्म किया,

وَجَآءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ وَمَا كَانُوْا لِيُؤْمِنُوْا ؕ

हालांके उन के पास उन के पैग़म्बर रोशन मोअजिज़ात ले कर आए थे लेकिन वो ईमान नहीं लाते थे।

كَذٰلِكَ نَجْزِى الْقَوْمَ الْمُجْرِمِيْنَ ﴿١٣﴾ ثُمَّ جَعَلْنٰكُمْ

इसी तरह हम मुजरिम क़ौम को सज़ा देंगे। फिर हम ने तुम्हें

خَلٰٓئِفَ فِى الْاَرْضِ مِنْۢ بَعْدِهِمْ لِنَنْظُرَ كَيْفَ

ज़मीन में उन के बाद जानशीन बनाया ताके हम देखें के तुम कैसे

تَعْمَلُوْنَ ﴿١٤﴾ وَاِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰيَاتُنَا بَيِّنٰتٍ ۙ قَالَ

अमल करते हो। और जब उन पर हमारी साफ साफ आयतें तिलावत की जाती हैं तो वो लोग केहते हैं

الَّذِيْنَ لَا يَرْجُوْنَ لِقَآءَنَا ائْتِ بِقُرْاٰنٍ غَيْرِ هٰذَآ

जो हमारी मुलाक़ात की उम्मीद नहीं रखते के तुम उस के अलावा क़ुरआन ले आओ

اَوْ بَدِّلْهُ ؕ قُلْ مَا يَكُوْنُ لِىْٓ اَنْ اُبَدِّلَهٗ مِنْ تِلْقَآئِ

या उसे बदल दो। आप फरमा दीजिए के मेरी ये मजाल नहीं के मैं उसे बदल दूँ अपनी

نَفْسِىْ ۚ اِنْ اَتَّبِعُ اِلَّا مَا يُوْحٰٓى اِلَىَّ ۚ اِنِّىْٓ اَخَافُ

तरफ से। मैं तो सिर्फ उस का इत्तिबा करता हूँ जो मेरी तरफ वही किया जा रहा है। यक़ीनन मैं डरता हूँ

اِنْ عَصَيْتُ رَبِّىْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيْمٍ ﴿١٥﴾ قُلْ لَّوْ شَآءَ

भारी दिन के अज़ाब से अगर मैं अपने रब की नाफरमानी करूँ। आप फरमा दीजिए के अगर

اللّٰهُ مَا تَلَوْتُهٗ عَلَيْكُمْ وَلَآ اَدْرٰىكُمْ بِهٖ ۖ فَقَدْ

अल्लाह चाहता तो मैं उसे तुम पर तिलावत न करता और मैं तुम्हें उस की खबर न देता। यक़ीनन

لَبِثْتُ فِيْكُمْ عُمُرًا مِّنْ قَبْلِهٖ ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿١٦﴾ فَمَنْ

मैं तुम्हारे साथ इस से पेहले उम्र के कई साल रहा। क्या फिर तुम्हें अक़्ल नहीं है? फिर उस से

اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا اَوْ كَذَّبَ بِاٰيٰتِهٖ ؕ

ज़्यादा ज़ालिम कौन होगा जो अल्लाह पर झूठ गढ़े या अल्लाह की आयतों को झुठलाए?

اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الْمُجْرِمُوْنَ ﴿١٧﴾ وَ يَعْبُدُوْنَ

यक़ीनन मुजरिम लोग फलाह नहीं पाएंगे। और ये अल्लाह को छोड़ कर ऐसी चीज़ों की

مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَضُرُّهُمْ وَلَا يَنْفَعُهُمْ وَ يَقُوْلُوْنَ

इबादत करते हैं जो उन्हें न ज़रर पहोंचा सकती हैं, न नफा पहोंचा सकती हैं, और ये केहते हैं के

هٰٓؤُلَآءِ شُفَعَآؤُنَا عِنْدَ اللّٰهِ ؕ قُلْ اَتُنَبِّـُٔوْنَ اللّٰهَ

ये हमारे सिफारिशी हैं अल्लाह के यहाँ। आप फरमा दीजिए के क्या तुम अल्लाह को खबर देते हो

بِمَا لَا يَعْلَمُ فِي السَّمٰوٰتِ وَلَا فِي الْاَرْضِ ؕ سُبْحٰنَهٗ وَتَعٰلٰى

ऐसी चीज़ की जो अल्लाह नहीं जानता आसमानों में और ज़मीन में। अल्लाह पाक है और बरतर है

عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿١٨﴾ وَمَا كَانَ النَّاسُ اِلَّآ اُمَّةً وَّاحِدَةً

उन चीज़ों से जिसे वो शरीक ठेहरा रहे हैं। और तमाम इन्सान नहीं थे मगर एक ही उम्मत,

فَاخْتَلَفُوْا ؕ وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَّبِّكَ لَقُضِيَ

फिर वो अलग अलग हो गए। और अगर एक बात तेरे रब की तरफ से पेहले से हो चुकी न होती तो उन के

بَيْنَهُمْ فِيْمَا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ﴿١٩﴾ وَ يَقُوْلُوْنَ

दरमियान फैसला कर दिया जाता उस में जिस में वो इखतिलाफ कर रहे हैं। और ये केहते हैं के

لَوْلَآ اُنْزِلَ عَلَيْهِ اٰيَةٌ مِّنْ رَّبِّهٖ ۚ فَقُلْ اِنَّمَا الْغَيْبُ

उस पर उस के रब की तरफ से कोई आयत क्यूं नहीं उतारी गई? आप फरमा दीजिए के ग़ैब तो सिर्फ

لِلّٰهِ فَانْتَظِرُوْا ۚ اِنِّيْ مَعَكُمْ مِّنَ الْمُنْتَظِرِيْنَ ﴿٢٠﴾ ع ٢

अल्लाह के लिए है, तो तुम मुन्तज़िर रहो। यक़ीनन मैं तुम्हारे साथ इन्तिज़ार करने वालों में से हूँ।

وَاِذَآ اَذَقْنَا النَّاسَ رَحْمَةً مِّنْۢ بَعْدِ ضَرَّآءَ مَسَّتْهُمْ

और जब इन्सानों को हम रहमत का मज़ा चखाते हैं किसी तकलीफ के बाद जो उन्हें पहोंची हो

اِذَا لَهُمْ مَّكْرٌ فِيْٓ اٰيَاتِنَا ؕ قُلِ اللّٰهُ اَسْرَعُ مَكْرًا ؕ

तो अचानक हमारी आयतों में उन का मक्र शुरू हो जाता है। आप फरमा दीजिए के अल्लाह जल्द तदबीर वाला है।

اِنَّ رُسُلَنَا يَكْتُبُوْنَ مَا تَمْكُرُوْنَ ﴿٢١﴾ هُوَ الَّذِيْ

यक़ीनन हमारे भेजे हुए फरिशते लिख रहे हैं उसे जो तुम मक्र करते हो। वही अल्लाह

يُسَيِّرُكُمْ فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ ؕ حَتّٰٓى اِذَا كُنْتُمْ فِي

तुम्हें सफर कराता है खुशकी में और समन्दर में। यहां तक के जब तुम कशती में

الْفُلْكِ ۚ وَ جَرَيْنَ بِهِمْ بِرِيْحٍ طَيِّبَةٍ وَّ فَرِحُوْا بِهَا

होते हो और वो कशतियाँ उन्हें ले कर चलती हैं उम्दा हवा के साथ और वो उस पर खुश होते हैं

جَآءَتْهَا رِيْحٌ عَاصِفٌ وَّ جَآءَهُمُ الْمَوْجُ مِنْ كُلِّ

तो कशती पर तूफानी हवा आ जाती है और उन पर मौज आ जाती है हर तरफ से

مَكَانٍ وَّظَنُّوْٓا اَنَّهُمْ اُحِيْطَ بِهِمْ ۙ دَعَوُا اللّٰهَ مُخْلِصِيْنَ

और वो समझते हैं के उन्हें घेर लिया गया। तो वो अल्लाह को पुकारने लगते हैं उसी के लिए इबादत को खालिस

لَهُ الدِّيْنَ ۚ لَئِنْ اَنْجَيْتَنَا مِنْ هٰذِهٖ لَنَكُوْنَنَّ

करते हुए के अगर तू हमें इस से नजात देगा तो हम शुक्र अदा करने वालों में से

مِنَ الشّٰكِرِيْنَ ﴿٢٣﴾ فَلَمَّآ اَنْجٰىهُمْ اِذَا هُمْ يَبْغُوْنَ فِى الْاَرْضِ

बन जाएंगे। फिर जब अल्लाह उन्हें बचा लेता है तो अचानक वो नाहक़ ज़मीन में सरकशी

بِغَيْرِ الْحَقِّ ؕ يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اِنَّمَا بَغْيُكُمْ عَلٰٓى اَنْفُسِكُمْ ۙ

करने लगते हैं। ऐ इन्सानो! तुम्हारी सरकशी का वबाल तुम्हारी जानों ही के खिलाफ पड़ेगा।

مَّتَاعَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۫ ثُمَّ اِلَيْنَا مَرْجِعُكُمْ فَنُنَبِّئُكُمْ

ये दुन्यवी ज़िन्दगी का नफा उठाना है। फिर हमारी तरफ तुम्हें वापस आना है, फिर हम तुम्हें खबर देंगे

بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٢٣﴾ اِنَّمَا مَثَلُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا

उन कामों की जो तुम करते थे। दुन्यवी ज़िन्दगी का हाल तो

كَمَآءٍ اَنْزَلْنٰهُ مِنَ السَّمَآءِ فَاخْتَلَطَ بِهٖ نَبَاتُ

उस पानी की तरह है जिसे हम ने आसमान से बरसाया, फिर उस के साथ ज़मीन का सबज़ा

الْاَرْضِ مِمَّا يَاْكُلُ النَّاسُ وَالْاَنْعَامُ ؕ حَتّٰٓى

मिल गया उस चीज़ में से जिस को इन्सान और चौपाए खाते हैं। यहां तक के

اِذَآ اَخَذَتِ الْاَرْضُ زُخْرُفَهَا وَازَّيَّنَتْ وَظَنَّ اَهْلُهَآ

जब ज़मीन ने अपनी ज़ीनत ले ली और मुज़य्यन हो गई और ज़मीन वालों ने समझा

اَنَّهُمْ قٰدِرُوْنَ عَلَيْهَآ ۙ اَتٰىهَآ اَمْرُنَا لَيْلًا اَوْ نَهَارًا

के वो उस पर क़ादिर हैं, तो उस पर हमारा हुक्म आ गया रात के वक्त या दिन के वक्त,

فَجَعَلْنٰهَا حَصِيْدًا كَاَنْ لَّمْ تَغْنَ بِالْاَمْسِ ؕ كَذٰلِكَ

फिर हम ने उस को कटी हुई खेती बना दी गोया के वो कल को आबाद ही नहीं हुई थी। इसी तरह

نُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ﴿٢٤﴾ وَاللّٰهُ يَدْعُوْٓا

हम आयतों को तफसील से बयान करते हैं ऐसी क़ौम के लिए जो सोचती है। और अल्लाह दारूस्सलाम की तरफ

اِلٰى دَارِ السَّلٰمِ ؕ وَيَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٢٥﴾

बुलाते हैं। और सीधे रास्ते की तरफ हिदायत देते हैं उस शख्स को जिसे वो चाहते हैं।

لِلَّذِيْنَ اَحْسَنُوا الْحُسْنٰى وَ زِيَادَةٌ ؕ وَلَا يَرْهَقُ وُجُوْهَهُمْ

उन लोगों के लिए जिन्हों ने भलाइयाँ कीं अच्छा बदला है और मज़ीद भी मिलेगा। और उन के चेहरों पर न

قَتَرٌ وَّلَا ذِلَّةٌ ؕ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ ۚ هُمْ فِيْهَا

(शरमिन्दगी की) सियाही होगी, न ज़िल्लत। ये लोग जन्नती हैं। वो उस में हमेशा

خٰلِدُوْنَ ﴿٢٦﴾ وَالَّذِيْنَ كَسَبُوا السَّيِّاٰتِ جَزَآءُ سَيِّئَةٍ

रहेंगे। और जिन लोगों ने बुराई कमाई तो उन के लिए उसी जैसी बुराई का

بِمِثْلِهَا ۙ وَ تَرْهَقُهُمْ ذِلَّةٌ ؕ مَا لَهُمْ مِّنَ اللّٰهِ مِنْ عَاصِمٍ ۚ

बदला मिलेगा। और उन को ज़िल्लत ढांप लेगी। कोई उन को अल्लाह से बचाने वाला न होगा।

كَاَنَّمَآ اُغْشِيَتْ وُجُوْهُهُمْ قِطَعًا مِّنَ الَّيْلِ مُظْلِمًا ؕ

गोया के उन के चेहरे ढांप दिए गए होंगे तारीक रात के टुकड़ों से।

اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿٢٧﴾ وَيَوْمَ

ये दोज़खी हैं। वो उस में हमेशा रहेंगे। और जिस दिन

نَحْشُرُهُمْ جَمِيْعًا ثُمَّ نَقُوْلُ لِلَّذِيْنَ اَشْرَكُوْا

हम उन तमाम को इकट्ठा करेंगे, फिर मुशरिकीन से कहेंगे के

مَكَانَكُمْ اَنْتُمْ وَ شُرَكَآؤُكُمْ ۚ فَزَيَّلْنَا بَيْنَهُمْ وَ قَالَ

तुम और तुम्हारे शुरका अपनी जगह पर रहो। फिर हम उन के दरमियान जुदाई कर देंगे और उन के शुरका

شُرَكَآؤُهُمْ مَّا كُنْتُمْ اِيَّانَا تَعْبُدُوْنَ ﴿٢٨﴾ فَكَفٰى بِاللّٰهِ

कहेंगे के तुम हमारी इबादत नहीं करते थे। फिर अल्लाह हमारे

شَهِيْدًا ۢ بَيْنَنَا وَ بَيْنَكُمْ اِنْ كُنَّا عَنْ عِبَادَتِكُمْ

और तुम्हारे दरमियान काफी गवाह है के यक़ीनन हम तुम्हारी इबादत से

لَغٰفِلِيْنَ ﴿٢٩﴾ هُنَالِكَ تَبْلُوْا كُلُّ نَفْسٍ مَّآ اَسْلَفَتْ

बेखबर थे। वहां हर शख्स मालूम कर लेगा उन आमाल को जो उस ने आगे भेजे

وَرُدُّوْٓا اِلَى اللّٰهِ مَوْلٰىهُمُ الْحَقِّ وَضَلَّ عَنْهُمْ

और वो लौटाए जाएंगे अल्लाह की तरफ जो उन का हक़ीक़ी मौला है और उन से खो जाएंगे

مَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ﴿٣٠﴾ قُلْ مَنْ يَّرْزُقُكُمْ مِّنَ السَّمَآءِ ع ١٠

जिसे वो झूठ गढ़ते थे। आप फरमा दीजिए कौन तुम्हें रोज़ी देता है आसमान से

وَالْاَرْضِ اَمَّنْ يَّمْلِكُ السَّمْعَ وَالْاَبْصَارَ وَمَنْ

और ज़मीन से? या कौन सिमाअत और बसारत पर क़ादिर है? और कौन

يُّخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَ يُخْرِجُ الْمَيِّتَ

ज़िन्दा को मुर्दा से निकालता है? और मुर्दा को ज़िन्दा से

مِنَ الْحَيِّ وَمَنْ يُّدَبِّرُ الْاَمْرَ ؕ فَسَيَقُوْلُوْنَ اللّٰهُ ۚ فَقُلْ

निकालता है? और कौन तमाम उमूर की तदबीर करता है? तो अनक़रीब वो कहेंगे अल्लाह। फिर आप फरमा दीजिए

اَفَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿٣١﴾ فَذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمُ الْحَقُّ ۚ فَمَاذَا بَعْدَ

के तुम डरते क्यूं नहीं हो? फिर यही अल्लाह तुम्हारा हक़ीक़ी रब है। फिर हक़ के

الْحَقِّ اِلَّا الضَّلٰلُ ۖۚ فَاَنّٰى تُصْرَفُوْنَ ﴿٣٢﴾ كَذٰلِكَ حَقَّتْ

बाद सिवाए गुमराही के क्या है? फिर तुम कहाँ फेरे जा रहे हो? इसी तरह आप के रब के कलिमात

كَلِمَتُ رَبِّكَ عَلَى الَّذِيْنَ فَسَقُوْٓا اَنَّهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿٣٣﴾

साबित हो गए उन पर जो नाफरमान हैं के वो ईमान नहीं लाएंगे।

قُلْ هَلْ مِنْ شُرَكَآئِكُمْ مَّنْ يَّبْدَؤُا الْخَلْقَ

आप फरमा दीजिए क्या तुम्हारे शुरका में से कोई है जो मखलूक़ को पेहली मरतबा पैदा करे, फिर उस को

ثُمَّ يُعِيْدُهٗ ؕ قُلِ اللّٰهُ يَبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ فَاَنّٰى

दोबारा पैदा करे? आप फरमा दीजिए के अल्लाह ही मखलूक़ को पेहली मरतबा पैदा करता है, फिर उस को दोबारा पैदा करेगा। फिर

تُؤْفَكُوْنَ ﴿٣٤﴾ قُلْ هَلْ مِنْ شُرَكَآئِكُمْ مَّنْ يَّهْدِيْٓ

तुम कहाँ उलटे फिरे जा रहे हो? आप फरमा दीजिए तुम्हारे शुरका में से कोई है जो हक़ की तरफ रहनुमाई

اِلَى الْحَقِّ ؕ قُلِ اللّٰهُ يَهْدِيْ لِلْحَقِّ ؕ اَفَمَنْ يَّهْدِيْٓ

करे? आप फरमा दीजिए के अल्लाह ही हक़ की तरफ रहनुमाई करता है। फिर जो हक़ की तरफ रहनुमाई करता है

اِلَى الْحَقِّ اَحَقُّ اَنْ يُّتَّبَعَ اَمَّنْ لَّا يَهِدِّيْٓ اِلَّآ اَنْ يُّهْدٰى ۚ

वो इस के ज़्यादा लाइक़ है के उस का इत्तिबा किया जाए या वो जो रास्ता नहीं पाता मगर ये के उसी की रहनुमाई की जाए।

فَمَا لَكُمْ قف كَيْفَ تَحْكُمُوْنَ ﴿٣٥﴾ وَمَا يَتَّبِعُ اَكْثَرُهُمْ
फिर तुम्हें क्या हुवा? तुम कैसे फैसले करते हो? और उन में से अक्सर नहीं चलते मगर गुमान के

اِلَّا ظَنًّا ط اِنَّ الظَّنَّ لَا يُغْنِىْ مِنَ الْحَقِّ شَيْـًٔا ط اِنَّ اللّٰهَ
पीछे। यक़ीनन गुमान हक़ के मुक़ाबले में कोई भी काम नहीं देता। यक़ीनन अल्लाह

عَلِيْمٌۢ بِمَا يَفْعَلُوْنَ ﴿٣٦﴾ وَمَا كَانَ هٰذَا الْقُرْاٰنُ
खूब जानता है उन कामों को जो वो कर रहे हैं। और ये क़ुरआन ऐसा नहीं है

اَنْ يُّفْتَرٰى مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلٰكِنْ تَصْدِيْقَ الَّذِىْ بَيْنَ
के उस का घड़ लिया जाए अल्लाह के सिवा (किसी और की तरफ से) लेकिन (ये क़ुरआन) उस को सच्चा बताता है जो पेहले

يَدَيْهِ وَ تَفْصِيْلَ الْكِتٰبِ لَا رَيْبَ فِيْهِ مِنْ رَّبِّ
से था और तमाम किताबों की तफसील करने वाला है, इस में कोई शक नहीं, ये रब्बुल आलमीन

الْعٰلَمِيْنَ ﴿٣٧﴾ قف اَمْ يَقُوْلُوْنَ افْتَرٰىهُ ط قُلْ فَاْتُوْا بِسُوْرَةٍ
की तरफ से है। क्या ये केहते हैं के इस नबी ने उस को घड़ लिया है? आप फरमा दीजिए के फिर तुम उस के

مِّثْلِهٖ وَادْعُوْا مَنِ اسْتَطَعْتُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ
जैसी एक सूरत ले आओ और बुलाओ उन सब को जिन की ताक़त रखते हो अल्लाह के अलावा

اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٣٨﴾ بَلْ كَذَّبُوْا بِمَا لَمْ يُحِيْطُوْا بِعِلْمِهٖ
अगर तुम सच्चे हो। बल्के उन्हों ने झुठलाया उस चीज़ को जिस के इल्म का उन्हों ने इहाता नहीं किया

وَلَمَّا يَاْتِهِمْ تَاْوِيْلُهٗ ط كَذٰلِكَ كَذَّبَ الَّذِيْنَ
और अब तक उन के पास उस की हक़ीक़त नहीं आई। इसी तरह उन लोगों ने झुठलाया जो

مِنْ قَبْلِهِمْ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٣٩﴾
उन से पेहले थे, फिर आप देखिए के ज़ालिमों का अन्जाम कैसा हुवा?

وَمِنْهُمْ مَّنْ يُّؤْمِنُ بِهٖ وَمِنْهُمْ مَّنْ لَّا يُؤْمِنُ بِهٖ ط
फिर उन में से कुछ लोग वो हैं जो उस पर ईमान रखते हैं और उन में से कुछ लोग वो हैं जो उस पर ईमान नहीं लाते।

وَرَبُّكَ اَعْلَمُ بِالْمُفْسِدِيْنَ ﴿٤٠﴾ ع وَاِنْ كَذَّبُوْكَ فَقُلْ ع ٩
और आप का रब फसाद फैलाने वालों को खूब जानता है। और अगर ये आप को झुठलाएं तो आप फरमा दीजिए

لِّىْ عَمَلِىْ وَلَكُمْ عَمَلُكُمْ ج اَنْتُمْ بَرِيْٓــُٔوْنَ مِمَّآ اَعْمَلُ
के मेरे लिए मेरा अमल है और तुम्हारे लिए तुम्हारा अमल है। तुम बरी हो मेरे अमल से

وَاَنَا بَرِیْٓءٌ مِّمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿٤١﴾ وَ مِنْهُمْ مَّنْ یَّسْتَمِعُوْنَ

और मैं बरी हूँ तुम्हारे अमल से। और उन में से कुछ लोग वो हैं जो आप की तरफ कान

اِلَیْكَ ؕ اَفَاَنْتَ تُسْمِعُ الصُّمَّ وَلَوْ كَانُوْا لَا یَعْقِلُوْنَ ﴿٤٢﴾

लगाते हैं। क्या फिर आप बेहरों को सुना सकते हैं अगर्चे उन्हें अक़्ल भी न हो?

وَ مِنْهُمْ مَّنْ یَّنْظُرُ اِلَیْكَ ؕ اَفَاَنْتَ تَهْدِی الْعُمْیَ

और उन में कुछ लोग वो हैं जो आप की तरफ देखते हैं। क्या फिर आप अन्धे को रास्ता दिखा सकते हैं

وَلَوْ كَانُوْا لَا یُبْصِرُوْنَ ﴿٤٣﴾ اِنَّ اللّٰهَ لَا یَظْلِمُ النَّاسَ

अगर्चे वो देख न सकते हों? यक़ीनन अल्लाह इन्सानों पर कुछ भी जुल्म

شَیْـًٔا وَّلٰكِنَّ النَّاسَ اَنْفُسَهُمْ یَظْلِمُوْنَ ﴿٤٤﴾ وَیَوْمَ

नहीं करता, लेकिन लोग अपने आप पर जुल्म करते हैं। और जिस दिन

یَحْشُرُهُمْ كَاَنْ لَّمْ یَلْبَثُوْٓا اِلَّا سَاعَةً مِّنَ النَّهَارِ

अल्लाह उन को इकट्ठा करेगा तो गोया के वो ठेहरे ही नहीं थे मगर दिन की एक घड़ी।

یَتَعَارَفُوْنَ بَیْنَهُمْ ؕ قَدْ خَسِرَ الَّذِیْنَ كَذَّبُوْا بِلِقَآءِ

वो आपस में एक दूसरे को पेहचानते होंगे। यक़ीनन नुक़सान उठाया उन लोगों ने जिन्हों ने झुठलाया

اللّٰهِ وَمَا كَانُوْا مُهْتَدِیْنَ ﴿٤٥﴾ وَاِمَّا نُرِیَنَّكَ بَعْضَ

अल्लाह की मुलाक़ात को और वो हिदायतयाफ्ता नहीं हुए। और अगर हम आप को दिखाएं उस का कुछ हिस्सा

الَّذِیْ نَعِدُهُمْ اَوْ نَتَوَفَّیَنَّكَ فَاِلَیْنَا مَرْجِعُهُمْ

जिस से हम उन को डरा रहे हैं या हम आप को वफात दें, फिर हमारी तरफ उन्हें वापस आना है,

ثُمَّ اللّٰهُ شَهِیْدٌ عَلٰی مَا یَفْعَلُوْنَ ﴿٤٦﴾ وَلِكُلِّ اُمَّةٍ

फिर अल्लाह गवाह है उन कामों पर जो वो कर रहे हैं। और हर एक उम्मत के लिए एक

رَّسُوْلٌ ۚ فَاِذَا جَآءَ رَسُوْلُهُمْ قُضِیَ بَیْنَهُمْ بِالْقِسْطِ

रसूल है। फिर जब उन का रसूल आ जाता है तो उन के दरमियान इन्साफ के साथ फैसला कर दिया जाता है

وَهُمْ لَا یُظْلَمُوْنَ ﴿٤٧﴾ وَ یَقُوْلُوْنَ مَتٰی هٰذَا الْوَعْدُ

और उन पर जुल्म नहीं किया जाता। और ये कहते हैं के ये वादा कब पूरा होगा

اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِیْنَ ﴿٤٨﴾ قُلْ لَّاۤ اَمْلِكُ لِنَفْسِیْ ضَرًّا

अगर तुम सच्चे हो? आप फरमा दीजिए के मैं खुद अपने लिए नफा और ज़रर

وَّلَا نَفۡعًا اِلَّا مَا شَآءَ اللّٰهُ ؕ لِكُلِّ اُمَّةٍ اَجَلٌ ؕ اِذَا جَآءَ

का मालिक नहीं मगर जितना अल्लाह चाहे। हर एक उम्मत के लिए एक आखिरी मुक़र्रर किया हुवा वक्त है। जब उन का

اَجَلُهُمۡ فَلَا يَسۡتَاۡخِرُوۡنَ سَاعَةً وَّلَا يَسۡتَقۡدِمُوۡنَ ۝۴۹

आखिरी वक्त आ जाता है तो वो एक घड़ी न पीछे हट सकते हैं और न एक घड़ी आगे बढ़ सकते हैं।

قُلۡ اَرَءَيۡتُمۡ اِنۡ اَتٰىكُمۡ عَذَابُهٗ بَيَاتًا اَوۡ نَهَارًا

आप फरमा दीजिए तुम्हारी क्या राए है अगर तुम्हारे पास अल्लाह का अज़ाब रात के वक्त आए या दिन के वक्त,

مَّاذَا يَسۡتَعۡجِلُ مِنۡهُ الۡمُجۡرِمُوۡنَ ۝۵۰ اَثُمَّ اِذَا مَا وَقَعَ

तो मुजरिम लोग किस चीज़ की जल्दी मचा रहे हैं? क्या फिर जब वो अज़ाब वाकेअ हो जाएगा तब तुम

اٰمَنۡتُمۡ بِهٖ ؕ آٰلۡـٰٔنَ وَقَدۡ كُنۡتُمۡ بِهٖ تَسۡتَعۡجِلُوۡنَ ۝۵۱

उस पर ईमान लाओगे? (तब तो कहा जाएगा के) अब (ईमान लाते हो?) हालांके तुम उस को जल्दी तलब कर रहे थे।

ثُمَّ قِيۡلَ لِلَّذِيۡنَ ظَلَمُوۡا ذُوۡقُوۡا عَذَابَ الۡخُلۡدِ ۚ

फिर ज़ालिमों से कहा जाएगा के तुम हमेशा का अज़ाब चखो।

هَلۡ تُجۡزَوۡنَ اِلَّا بِمَا كُنۡتُمۡ تَكۡسِبُوۡنَ ۝۵۲ وَيَسۡتَنۡۢبِـُٔوۡنَكَ

तुम्हें सज़ा नहीं दी जाएगी मगर उन्ही कामों की जो तुम करते थे। और ये आप से मालूम करते हैं के

اَحَقٌّ هُوَ ؕ قُلۡ اِىۡ وَرَبِّىۡۤ اِنَّهٗ لَحَقٌّ ۚ وَمَاۤ اَنۡتُمۡ

क्या ये हक़ है? आप फरमा दीजिए के जी हां! मेरे रब की क़सम! यक़ीनन ये हक़ है। और तुम अल्लाह को (भाग कर)

وقف النبي صلى الله عليه وآله وسلم ع ۵

بِمُعۡجِزِيۡنَ ۝۵۳ وَلَوۡ اَنَّ لِكُلِّ نَفۡسٍ ظَلَمَتۡ

आजिज़ नहीं बना सकते। और अगर हर ज़ालिम शख्स को दुन्या की तमाम चीज़ें मिल जाएं जो ज़मीन में

مَا فِى الۡاَرۡضِ لَافۡتَدَتۡ بِهٖ ؕ وَاَسَرُّوا النَّدَامَةَ

हैं, तो यक़ीनन वो उन सब को फिदये में दे देगा। और वो नदामत को छुपाएंगे

لَمَّا رَاَوُا الۡعَذَابَ ۚ وَقُضِىَ بَيۡنَهُمۡ بِالۡقِسۡطِ وَهُمۡ

जब अज़ाब को देखेंगे। और उन के दरमियान इन्साफ के साथ फैसला कर दिया जाएगा और उन पर

لَا يُظۡلَمُوۡنَ ۝۵۴ اَلَاۤ اِنَّ لِلّٰهِ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضِ ؕ

जुल्म नहीं किया जाएगा। सुनो! यक़ीनन अल्लाह की मिल्क हैं वो तमाम चीज़ें जो आसमानों और ज़मीन में हैं।

اَلَاۤ اِنَّ وَعۡدَ اللّٰهِ حَقٌّ وَّلٰـكِنَّ اَكۡثَرَهُمۡ لَا

सुनो! यक़ीनन अल्लाह का वादा सच्चा है, लेकिन उन में से अक्सर

يَعْلَمُوْنَ ﴿٥٥﴾ هُوَ يُحْيٖ وَ يُمِيْتُ وَاِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿٥٦﴾

जानते नहीं। वही ज़िन्दगी देता है और मौत देता है और उसी की तरफ तुम लौटाए जाओगे।

يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَآءَتْكُمْ مَّوْعِظَةٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ

ऐ इन्सानो! यक़ीनन तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ से नसीहत आई है

وَ شِفَآءٌ لِّمَا فِي الصُّدُوْرِ ۙ وَ هُدًى وَّ رَحْمَةٌ

और दिलों की बीमारियों के लिए शिफा और हिदायत और ईमान वालों के लिए

لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٥٧﴾ قُلْ بِفَضْلِ اللّٰهِ وَ بِرَحْمَتِهٖ فَبِذٰلِكَ

रहमत आई है। आप फरमा दीजिए के ये अल्लाह के फ़ज़्ल और उस की रहमत की बिना पर है, फिर उस पर

فَلْيَفْرَحُوْا ؕ هُوَ خَيْرٌ مِّمَّا يَجْمَعُوْنَ ﴿٥٨﴾ قُلْ اَرَءَيْتُمْ

उन्हें खुश होना चाहिए। ये बेहतर है उन तमाम चीज़ों से जो वो इकट्ठी कर रहे हैं। आप फरमा दीजिए क्या तुम

مَّآ اَنْزَلَ اللّٰهُ لَكُمْ مِّنْ رِّزْقٍ فَجَعَلْتُمْ مِّنْهُ

ग़ौर नहीं करते जो रिज़्क़ अल्लाह ने तुम्हारे लिए उतारा, फिर उस में से कुछ तुम

حَرَامًا وَّ حَلٰلًا ؕ قُلْ آٰللّٰهُ اَذِنَ لَكُمْ

ने हलाल और कुछ हराम बना दिया। आप फरमा दीजिए क्या अल्लाह ने तुम्हें खबर दी

اَمْ عَلَى اللّٰهِ تَفْتَرُوْنَ ﴿٥٩﴾ وَ مَا ظَنُّ الَّذِيْنَ يَفْتَرُوْنَ

या तुम अल्लाह पर झूठ घड़ते हो? और उन लोगों का गुमान जो अल्लाह पर

عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَذُوْ

झूठ घड़ते हैं क़यामत के दिन क्या होगा? यक़ीनन अल्लाह इन्सानों

فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَشْكُرُوْنَ ﴿٦٠﴾ ع ٦

पर फ़ज़्ल वाले हैं, लेकिन उन में से अक्सर शुक्र अदा नहीं करते।

وَمَا تَكُوْنُ فِيْ شَاْنٍ وَّمَا تَتْلُوْا مِنْهُ

और आप जिस हाल में होते हैं और जो कुरआन तिलावत कर रहे

مِنْ قُرْاٰنٍ وَّلَا تَعْمَلُوْنَ مِنْ عَمَلٍ اِلَّا كُنَّا عَلَيْكُمْ

होते हैं और तुम जो अमल भी कर रहे होते हैं मगर हम तुम्हें देख रहे

شُهُوْدًا اِذْ تُفِيْضُوْنَ فِيْهِ ؕ وَمَا يَعْزُبُ عَنْ

होते हैं जब तुम उस में मसरूफ होते हैं। और आप के रब से ग़ाइब

رَبِّكَ مِنْ مِّثْقَالِ ذَرَّةٍ فِي الْاَرْضِ وَلَا

नहीं है ज़र्रा भर कोई चीज़, न ज़मीन में और न

فِي السَّمَآءِ وَلَآ اَصْغَرَ مِنْ ذٰلِكَ وَلَآ اَكْبَرَ

आसमान में और न उस से छोटी और न उस से बड़ी चीज़ मगर वो साफ साफ बयान करने वाली किताब

اِلَّا فِيْ كِتٰبٍ مُّبِيْنٍ ﴿٦١﴾ اَلَآ اِنَّ اَوْلِيَآءَ اللّٰهِ

(लौहे महफ़ूज़) में लिखी हुई है। सुनो! यक़ीनन अल्लाह के दोस्त,

لَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿٦٢﴾ اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

उन पर न खौफ होगा और न वो ग़मगीन होंगे। वो जो ईमान लाए

وَكَانُوْا يَتَّقُوْنَ ﴿٦٣﴾ لَهُمُ الْبُشْرٰى فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا

और जो मुत्तक़ी रहे। उन के लिए बशारत है दुन्यवी ज़िन्दगी में

وَفِي الْاٰخِرَةِ ؕ لَا تَبْدِيْلَ لِكَلِمٰتِ اللّٰهِ ؕ ذٰلِكَ

और आखिरत में। अल्लाह के कलिमात को बदला नहीं जा सकता। ये

هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ﴿٦٤﴾ وَلَا يَحْزُنْكَ قَوْلُهُمْ ۘ وقف لازم

बड़ी कामयाबी है। और आप को ग़मगीन न करे उन की बात।

اِنَّ الْعِزَّةَ لِلّٰهِ جَمِيْعًا ؕ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿٦٥﴾

यक़ीनन इज़्ज़त सारी की सारी अल्लाह के लिए है। वही सुनने वाला, इल्म वाला है।

اَلَآ اِنَّ لِلّٰهِ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَمَنْ فِي الْاَرْضِ ؕ

सुनो! यक़ीनन अल्लाह ही की मिल्क हैं वो तमाम चीज़ें जो आसमानों में हैं और जो ज़मीन में हैं।

وَمَا يَتَّبِعُ الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ

और ये जो पीछे चल रहे हैं वो लोग जो अल्लाह को छोड़ कर पुकारते हैं

شُرَكَآءَ ؕ اِنْ يَّتَّبِعُوْنَ اِلَّا الظَّنَّ وَاِنْ هُمْ

शुरका को, ये सिर्फ गुमान ही के पीछे चल रहे हैं और ये सिर्फ अटकल से

اِلَّا يَخْرُصُوْنَ ﴿٦٦﴾ هُوَ الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمُ الَّيْلَ

बातें करते हैं। वही अल्लाह है जिस ने तुम्हारे लिए रात बनाई

لِتَسْكُنُوْا فِيْهِ وَالنَّهَارَ مُبْصِرًا ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ

ताके तुम उस में सुकून हासिल करो और दिन को रोशन बनाया। यक़ीनन उस में सुनने वाली क़ौम के

لِّقَوْمٍ يَّسْمَعُوْنَ ﴿٦٧﴾ قَالُوا اتَّخَذَ اللّٰهُ وَلَدًا سُبْحٰنَهٗ ؕ

लिए निशानियाँ हैं। ये केहते हैं के अल्लाह औलाद रखता है, अल्लाह उस से पाक है।

هُوَ الْغَنِيُّ ؕ لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ؕ

वो बेनियाज़ है। उस की मिल्क हैं वो तमाम चीज़ें जो आसमानों में हैं और जो ज़मीन में हैं।

اِنْ عِنْدَكُمْ مِّنْ سُلْطٰنٍ بِهٰذَا ؕ اَتَقُوْلُوْنَ

तुम्हारे पास इस की कोई दलील नहीं हैं। क्या तुम अल्लाह पर

عَلَى اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٦٨﴾ قُلْ اِنَّ الَّذِيْنَ يَفْتَرُوْنَ

ऐसी बातें केहते हो जो तुम जानते नहीं हो। आप फरमा दीजिए यक़ीनन वो लोग जो अल्लाह पर

عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ لَا يُفْلِحُوْنَ ﴿٦٩﴾ مَتَاعٌ فِي الدُّنْيَا

झूठ घड़ते हैं वो कामयाब नहीं होंगे। दुन्या में थोड़ा नफा उठाना है,

ثُمَّ اِلَيْنَا مَرْجِعُهُمْ ثُمَّ نُذِيْقُهُمُ الْعَذَابَ الشَّدِيْدَ

फिर हमारी तरफ उन्हें वापस आना है, फिर हम उन्हें सख्ततरीन अज़ाब चखाएँगे

بِمَا كَانُوْا يَكْفُرُوْنَ ﴿٧٠﴾ وَاتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَاَ نُوْحٍ ۘ اِذْ قَالَ

इस वजह से के वो कुफ्र करते थे। और आप उन को नूह (अलैहिस्सलाम) का वाक़िआ बयान कीजिए। जब उन्हों ने

لِقَوْمِهٖ يٰقَوْمِ اِنْ كَانَ كَبُرَ عَلَيْكُمْ مَّقَامِيْ

अपनी क़ौम से फरमाया ऐ मेरी क़ौम! अगर तुम पर गिरां है मेरा (इस काम के लिए) खड़ा होना

وَتَذْكِيْرِيْ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ فَعَلَى اللّٰهِ تَوَكَّلْتُ فَاَجْمِعُوْٓا

और अल्लाह की आयात के ज़रिए नसीहत करना, तो मैं ने अल्लाह पर भरोसा किया, तो अपने काम

اَمْرَكُمْ وَ شُرَكَآءَكُمْ ثُمَّ لَا يَكُنْ اَمْرُكُمْ عَلَيْكُمْ

और शुरका को इकट्ठा कर लो, फिर तुम्हारा मुआमला तुम्हारे लिए घुटन का बाइस

غُمَّةً ثُمَّ اقْضُوْٓا اِلَيَّ وَلَا تُنْظِرُوْنِ ﴿٧١﴾ فَاِنْ تَوَلَّيْتُمْ

न रहे, फिर तुम मुझ पर हमला करो और मुझे मोहलत भी न दो। फिर अगर तुम ऐराज़ करो

فَمَا سَاَلْتُكُمْ مِّنْ اَجْرٍ ؕ اِنْ اَجْرِيَ اِلَّا عَلَى اللّٰهِ ۙ

तो मैं ने तुम से किसी अज्र का सवाल नहीं किया। मेरा अज्र सिर्फ अल्लाह के ज़िम्मे है।

وَاُمِرْتُ اَنْ اَكُوْنَ مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ ﴿٧٢﴾ فَكَذَّبُوْهُ

और मुझे इस का हुक्म दिया गया है के मैं मुसलमानों में से हूँ। फिर उन्हों ने नूह (अलैहिस्सलाम) को झुठलाया,

فَنَجَّيْنٰهُ وَمَنْ مَّعَهٗ فِى الْفُلْكِ وَ جَعَلْنٰهُمْ خَلٰٓئِفَ

फिर हम ने उन्हें नजात दी और उन लोगों को भी जो उन के साथ कशती में थे और हम ने उन्हें जानशीन बनाया और हम

وَاَغْرَقْنَا الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا ۚ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ

ने उन को गर्क़ किया जिन्हों ने हमारी आयतों को झुठलाया। फिर आप देखिए के डराए जाने

عَاقِبَةُ الْمُنْذَرِيْنَ ﴿٧٣﴾ ثُمَّ بَعَثْنَا مِنْۢ بَعْدِهٖ رُسُلًا

वालों का अन्जाम कैसा हुवा? फिर उन के बाद हम ने पैग़म्बर भेजे

اِلٰى قَوْمِهِمْ فَجَآءُوْهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ فَمَا كَانُوْا لِيُؤْمِنُوْا

उन की क़ौम की तरफ, फिर वो उन के पास रोशन मोअजिज़ात ले कर आए, फिर भी वो ईमान नहीं लाते थे

بِمَا كَذَّبُوْا بِهٖ مِنْ قَبْلُ ؕ كَذٰلِكَ نَطْبَعُ عَلٰى قُلُوْبِ

इस वजह से के इस से पेहले झुठला चुके थे। इसी तरह हम हद से आगे बढ़ने वालों के दिलों

الْمُعْتَدِيْنَ ﴿٧٤﴾ ثُمَّ بَعَثْنَا مِنْۢ بَعْدِهِمْ مُّوْسٰى وَ هٰرُوْنَ

पर मुहर लगा देते हैं। फिर हम ने उन के बाद मूसा (अलैहिस्सलाम) और हारून (अलैहिस्सलाम) को

اِلٰى فِرْعَوْنَ وَمَلَا۟ئِهٖ بِاٰيٰتِنَا فَاسْتَكْبَرُوْا وَكَانُوْا

फिरऔन और उस की क़ौम की तरफ अपनी आयात दे कर भेजा, फिर उन्हों ने बड़ा बनना चाहा और वो

قَوْمًا مُّجْرِمِيْنَ ﴿٧٥﴾ فَلَمَّا جَآءَهُمُ الْحَقُّ مِنْ عِنْدِنَا

मुजरिम क़ौम थी। फिर जब उन के पास हक़ आया हमारी तरफ से,

قَالُوْٓا اِنَّ هٰذَا لَسِحْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿٧٦﴾ قَالَ مُوْسٰٓى

तो उन्हों ने कहा के यक़ीनन ये खुला जादू है। मूसा (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया

اَتَقُوْلُوْنَ لِلْحَقِّ لَمَّا جَآءَكُمْ ؕ اَسِحْرٌ هٰذَا ؕ وَلَا يُفْلِحُ

क्या तुम ये हक़ के मुतअल्लिक़ केहते हो जब वो तुम्हारे पास आया? क्या ये जादू है? और जादूगर तो कामयाब

السّٰحِرُوْنَ ﴿٧٧﴾ قَالُوْٓا اَجِئْتَنَا لِتَلْفِتَنَا عَمَّا وَجَدْنَا عَلَيْهِ

नहीं होते। तो उन्हों ने कहा के क्या आप हमारे पास आए हो ताके हमें फेर दो उस से जिस पर हम

اٰبَآءَنَا وَ تَكُوْنَ لَكُمَا الْكِبْرِيَآءُ فِى الْاَرْضِ ؕ

ने अपने बाप दादा को पाया और इस मुल्क में तुम दोनों को सरदारी मिल जाए।

وَمَا نَحْنُ لَكُمَا بِمُؤْمِنِيْنَ ﴿٧٨﴾ وَ قَالَ فِرْعَوْنُ ائْتُوْنِىْ

और हम तुम दोनों पर ईमान लाने वाले नहीं हैं। और फिरऔन ने कहा के तुम मेरे

بِكُلِّ سٰحِرٍ عَلِيْمٍ ﴿٧٩﴾ فَلَمَّا جَآءَ السَّحَرَةُ قَالَ لَهُمْ

पास हर माहिर जादूगर को ले आओ। फिर जब जादूगर आए तो उन से मूसा (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया के

مُّوْسٰٓى اَلْقُوْا مَآ اَنْتُمْ مُّلْقُوْنَ ﴿٨٠﴾ فَلَمَّآ اَلْقَوْا

डालो जो तुम डालने वाले हो। फिर जब उन्हों ने डाला

قَالَ مُوْسٰى مَا جِئْتُمْ بِهِ ۙ السِّحْرُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ

तो मूसा (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया जो तुम लाए हो वो जादू है। यक़ीनन अल्लाह

سَيُبْطِلُهٗ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُصْلِحُ عَمَلَ الْمُفْسِدِيْنَ ﴿٨١﴾

अनक़रीब उस को बातिल कर देगा। यक़ीनन अल्लाह फसाद फैलाने वालों के अमल को चलने नहीं देता।

وَيُحِقُّ اللّٰهُ الْحَقَّ بِكَلِمٰتِهٖ وَلَوْ كَرِهَ الْمُجْرِمُوْنَ ﴿٨٢﴾ ع ١٣

और अल्लाह हक़ को अपने कलिमात के ज़रिए हक़ साबित करेगा अगर्चे मुजरिम नापसन्द करें।

فَمَآ اٰمَنَ لِمُوْسٰٓى اِلَّا ذُرِّيَّةٌ مِّنْ قَوْمِهٖ عَلٰى خَوْفٍ

फिर मूसा (अलैहिस्सलाम) पर ईमान नहीं लाई मगर थोड़ी सी जमाअत आप की क़ौम में से फिरऔन और उस की

مِّنْ فِرْعَوْنَ وَمَلَا۟ئِهِمْ اَنْ يَّفْتِنَهُمْ ؕ وَاِنَّ فِرْعَوْنَ

जमाअत के खौफ की वजह से के वो उन को अज़ाब में मुबतला करेंगे। और यक़ीनन फिरऔन

لَعَالٍ فِى الْاَرْضِ ۚ وَاِنَّهٗ لَمِنَ الْمُسْرِفِيْنَ ﴿٨٣﴾ وَ قَالَ

उस मुल्क में बरतरी वाला था। और यक़ीनन वो हद से आगे बढ़ने वालों में से था। और मूसा (अलैहिस्सलाम)

مُوْسٰى يٰقَوْمِ اِنْ كُنْتُمْ اٰمَنْتُمْ بِاللّٰهِ فَعَلَيْهِ تَوَكَّلُوْٓا

ने फरमाया ऐ मेरी क़ौम! अगर तुम ईमान रखते हो अल्लाह पर तो उसी पर तवक्कुल करो

اِنْ كُنْتُمْ مُّسْلِمِيْنَ ﴿٨٤﴾ فَقَالُوْا عَلَى اللّٰهِ تَوَكَّلْنَا ۚ

अगर तुम मुसलमान हो। तो उन्हों ने कहा के अल्लाह पर हम ने तवक्कुल किया।

رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا فِتْنَةً لِّلْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٨٥﴾ وَنَجِّنَا

ऐ हमारे रब! तू हमें ज़ालिम क़ौम का तख्तए मश्क़ न बना। और तू अपनी

بِرَحْمَتِكَ مِنَ الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ﴿٨٦﴾ وَاَوْحَيْنَآ

रहमत से काफिर क़ौम से हमें नजात दे। और हम ने वही की मूसा (अलैहिस्सलाम) और उन के भाई

اِلٰى مُوْسٰى وَاَخِيْهِ اَنْ تَبَوَّاٰ لِقَوْمِكُمَا بِمِصْرَ

की तरफ के तुम दोनों ठिकाना बनाओ अपनी क़ौम के लिए मिस्र में

بُيُوْتًا وَّاجْعَلُوْا بُيُوْتَكُمْ قِبْلَةً وَّاَقِيْمُوا

घरों को और अपने घर क़िबलारूख बनाओ और नमाज़

الصَّلٰوةَ ؕ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٨٧﴾ وَقَالَ مُوْسٰى رَبَّنَآ

क़ाइम करो। और आप ईमान वालों को बशारत सुना दीजिए। और मूसा (अलैहिस्सलाम) ने कहा ऐ हमारे रब!

اِنَّكَ اٰتَيْتَ فِرْعَوْنَ وَ مَلَاَهٗ زِيْنَةً وَّ اَمْوَالًا

यक़ीनन तू ने फिरऔन और उस की क़ौम को ज़ीनत दी और माल दिया

فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۙ رَبَّنَا لِيُضِلُّوْا عَنْ سَبِيْلِكَ ۚ

दुन्यवी ज़िन्दगी में। ऐ हमारे रब! इस लिए ताके वो तेरे रास्ते से गुमराह करें?

رَبَّنَا اطْمِسْ عَلٰٓى اَمْوَالِهِمْ وَاشْدُدْ

ऐ हमारे रब! उन के मालों को मिटा दे और उन के दिलों को

عَلٰى قُلُوْبِهِمْ فَلَا يُؤْمِنُوْا حَتّٰى يَرَوُا الْعَذَابَ الْاَلِيْمَ ﴿٨٨﴾

सख्त कर दे के वो ईमान न लाएं यहां तक के दर्दनाक अज़ाब देखें।

قَالَ قَدْ اُجِيْبَتْ دَّعْوَتُكُمَا فَاسْتَقِيْمَا

अल्लाह ने फरमाया यक़ीनन तुम दोनों की दुआ क़बूल कर ली गई, तो तुम इस्तिक़ामत से रहो

وَلَا تَتَّبِعٰٓنِّ سَبِيْلَ الَّذِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٨٩﴾ وَجٰوَزْنَا

और उन लोगों के रास्ते पर न चलना जो जानते नहीं। और हम ने

بِبَنِىْٓ اِسْرَآءِيْلَ الْبَحْرَ فَاَتْبَعَهُمْ فِرْعَوْنُ

बनी इस्राईल को समन्दर पार करा दिया, फिर फिरऔन और उस का लशकर उन के पीछे आया

وَجُنُوْدُهٗ بَغْيًا وَّعَدْوًا ؕ حَتّٰٓى اِذَآ اَدْرَكَهُ الْغَرَقُ ۙ

सरकशी करता हुवा और हद से तजावुज़ करता हुवा। यहां तक के जब फिरऔन डूबने लगा

قَالَ اٰمَنْتُ اَنَّهٗ لَآ اِلٰهَ اِلَّا الَّذِىْٓ اٰمَنَتْ بِهٖ

तो केहने लगा के मैं ईमान ले आया ये के कोई माबूद नहीं मगर वही जिस पर

بَنُوْٓا اِسْرَآءِيْلَ وَاَنَا مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ ﴿٩٠﴾ آٰلْـٰٔنَ

बनू इस्राईल ईमान लाए हैं और मैं मुसलमानों में से हूँ। (फरिश्ते ने कहा) क्या अब (ईमान लाया)

وَقَدْ عَصَيْتَ قَبْلُ وَكُنْتَ مِنَ الْمُفْسِدِيْنَ ﴿٩١﴾

हालांके तू इस से पेहले नाफरमान था और तू फसाद फैलाने वालों में से रहा।

فَالْيَوْمَ نُنَجِّيْكَ بِبَدَنِكَ لِتَكُوْنَ لِمَنْ خَلْفَكَ

तो आज हम तेरे बदन को बचा लेंगे ताके तेरे पीछे आने वालों के लिए वो इब्रत

اٰيَةً ؕ وَاِنَّ كَثِيْرًا مِّنَ النَّاسِ عَنْ اٰيٰتِنَا

बने। और यक़ीनन इन्सानों में से बहोत से हमारी आयतों से

لَغٰفِلُوْنَ ﴿٩٢﴾ وَلَقَدْ بَوَّاْنَا بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ مُبَوَّاَ ع ١٢

ग़ाफिल हैं। और तहक़ीक़ के हम ने बनी इस्राईल को ठिकाना दिया सच्चाई के

صِدْقٍ وَّرَزَقْنٰهُمْ مِّنَ الطَّيِّبٰتِ ۚ فَمَا اخْتَلَفُوْا

रेहने की जगह और हम ने उन्हें उम्दा चीज़ों में से रोज़ी दी। फिर उन्हों ने इखतिलाफ नहीं किया

حَتّٰى جَآءَهُمُ الْعِلْمُ ؕ اِنَّ رَبَّكَ يَقْضِيْ بَيْنَهُمْ

यहां तक के उन के पास इल्म आया। यक़ीनन तेरा रब उन के दरमियान क़यामत

يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فِيْمَا كَانُوْا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ﴿٩٣﴾

के दिन फैसला करेगा उन चीज़ों में जिस में वो इखतिलाफ कर रहे हैं।

فَاِنْ كُنْتَ فِيْ شَكٍّ مِّمَّآ اَنْزَلْنَآ اِلَيْكَ فَسْـَٔلِ الَّذِيْنَ

फिर अगर आप शक में हैं उस की तरफ से जो हम ने आप की तरफ उतारा तो आप सवाल कीजिए

يَقْرَءُوْنَ الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِكَ ۚ لَقَدْ جَآءَكَ

उन से जो किताब पढ़ते हैं आप से भी पेहले। यक़ीनन आप के पास

الْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ فَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُمْتَرِيْنَ ﴿٩٤﴾

हक़ आया आप के रब की तरफ से, इस लिए आप शक करने वालों में से न हों।

وَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ

और आप उन लोगों में से न हों जिन्हों ने अल्लाह की आयतों को झुठलाया,

فَتَكُوْنَ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ﴿٩٥﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ حَقَّتْ

फिर आप खसारा उठाने वालों में से हो जाएंगे। यक़ीनन वो लोग जिन के

عَلَيْهِمْ كَلِمَتُ رَبِّكَ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿٩٦﴾ وَلَوْ جَآءَتْهُمْ

ऊपर तेरे रब के कलिमात साबित हो गए, वो ईमान नहीं लाएंगे। अगर्चे उन के पास

كُلُّ اٰيَةٍ حَتّٰى يَرَوُا الْعَذَابَ الْاَلِيْمَ ﴿٩٧﴾ فَلَوْلَا

तमाम मोअजिज़ात भी आ जाऐं, (वो ईमान नहीं लाएंगे) यहां तक के दर्दनाक अज़ाब देख लें। फिर कोई

كَانَتْ قَرْيَةٌ اٰمَنَتْ فَنَفَعَهَآ اِيْمَانُهَآ اِلَّا قَوْمَ

बस्ती जो ईमान लाई हो, फिर उस के ईमान लाने ने उस को नफा दिया हो, कोई बस्ती नहीं हुई सिवाए यूनुस

يُوْنُسَ ؕ لَمَّآ اٰمَنُوْا كَشَفْنَا عَنْهُمْ عَذَابَ الْخِزْيِ

(अलैहिस्सलाम) की क़ौम के। जब वो ईमान लाए तो उन से हम ने रूस्वाई के अज़ाब को हटा दिया

فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَ مَتَّعْنٰهُمْ اِلٰى حِيْنٍ ﴿٩٨﴾

दुन्यवी ज़िन्दगी में और उन को हम ने एक वक्त तक मुतमत्तेअ किया।

وَلَوْ شَآءَ رَبُّكَ لَاٰمَنَ مَنْ فِي الْاَرْضِ كُلُّهُمْ جَمِيْعًا ؕ

और अगर आप का रब चाहता तो वो सारे के सारे जो ज़मीन में हैं इकट्ठे ईमान ले आते।

اَفَاَنْتَ تُكْرِهُ النَّاسَ حَتّٰى يَكُوْنُوْا مُؤْمِنِيْنَ ﴿٩٩﴾

क्या फिर आप इन्सानों को मजबूर कर सकते हो के वो ईमान ले आएं?

وَمَا كَانَ لِنَفْسٍ اَنْ تُؤْمِنَ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ ؕ

और किसी शख्स की ये ताक़त नहीं है के वो ईमान लाए मगर अल्लाह की इजाज़त से।

وَ يَجْعَلُ الرِّجْسَ عَلَى الَّذِيْنَ لَا يَعْقِلُوْنَ ﴿١٠٠﴾

और अल्लाह गन्दगी रखते हैं उन पर जो अक़्ल नहीं रखते।

قُلِ انْظُرُوْا مَاذَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ

आप फरमा दीजिए के तुम देखो के क्या चीज़ें हैं आसमानों में और ज़मीन में?

وَمَا تُغْنِي الْاٰيٰتُ وَالنُّذُرُ عَنْ قَوْمٍ لَّا يُؤْمِنُوْنَ ﴿١٠١﴾

और मोअजिज़ात और डराने वाले कुछ काम नहीं आते ऐसी क़ौम से जो ईमान नहीं लाती।

فَهَلْ يَنْتَظِرُوْنَ اِلَّا مِثْلَ اَيَّامِ الَّذِيْنَ خَلَوْا

फिर वो मुन्तज़िर नहीं हैं मगर उन लोगों के जैसे दिनों के जो उन

مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ قُلْ فَانْتَظِرُوْٓا اِنِّيْ مَعَكُمْ

से पेहले गुज़र चुके। आप फरमा दीजिए फिर तुम मुन्तज़िर रहो, यक़ीनन मैं तुम्हारे साथ इन्तिज़ार

مِّنَ الْمُنْتَظِرِيْنَ ﴿١٠٢﴾ ثُمَّ نُنَجِّيْ رُسُلَنَا وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كَذٰلِكَ ۚ

करने वालों में से हूँ। फिर हम अपने पैग़म्बरों को बचा लेंगे और उन लोगों को जो ईमान लाए हैं, इसी तरह।

حَقًّا عَلَيْنَا نُنْجِ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٠٣﴾ۚ قُلْ يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اِنْ ع ١٥

हमारे ज़िम्मे लाज़िम है के हम ईमान वालों को नजात दें। आप फरमा दीजिए ऐ इन्सानो! अगर

كُنْتُمْ فِيْ شَكٍّ مِّنْ دِيْنِيْ فَلَآ اَعْبُدُ الَّذِيْنَ

तुम शक में हो मेरे दीन की तरफ से तो मैं इबादत नहीं करूंगा उन की

تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلٰكِنْ اَعْبُدُ اللّٰهَ الَّذِيْ

जिन की तुम अल्लाह को छोड़ कर इबादत करते हो, लेकिन मैं तो इबादत करता हूँ उस अल्लाह की जो तुम्हें

يَتَوَفّٰىكُمْ ۖ وَاُمِرْتُ اَنْ اَكُوْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٠٤﴾

वफात देगा। और मुझे हुक्म दिया गया है के मैं ईमान वालों में से रहूँ।

وَاَنْ اَقِمْ وَجْهَكَ لِلدِّيْنِ حَنِيْفًا ۚ وَلَا تَكُوْنَنَّ

और ये के आप अपना चेहरा सीधा रखिए इस दीन के लिए हर तरफ से कट कर। और मुशरिकीन

مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿١٠٥﴾ وَلَا تَدْعُ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ

में से मत बनिए। और अल्लाह के अलावा ऐसी चीज़ों को मत पुकारिए जो

مَا لَا يَنْفَعُكَ وَلَا يَضُرُّكَ ۚ فَاِنْ فَعَلْتَ فَاِنَّكَ

आप को न नफा दे सकती हैं और न ज़रर पहोंचा सकती हैं। फिर अगर आप ऐसा करेंगे तो यक़ीनन आप

اِذًا مِّنَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿١٠٦﴾ وَاِنْ يَّمْسَسْكَ اللّٰهُ بِضُرٍّ

क़ुसूरवारों में से हो जाएंगे। और अगर आप को अल्लाह नुक़सान पहोंचाए

فَلَا كَاشِفَ لَهٗٓ اِلَّا هُوَ ۚ وَاِنْ يُّرِدْكَ بِخَيْرٍ فَلَا رَآدَّ

तो उस के सिवा कोई भी उसे दूर करने वाला नहीं। और अगर वो तुम्हारी भलाई का इरादा करे तो अल्लाह के फ़ज़्ल को

لِفَضْلِهٖ ۭ يُصِيْبُ بِهٖ مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ ۭ وَهُوَ

कोई रोक नहीं सकता। वो अपने बन्दों में से जिसे अपना फ़ज़्ल पहोंचाना चाहे पहोंचा देता है। और वो

الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ﴿١٠٧﴾ قُلْ يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَآءَكُمُ

बख़्शने वाला, निहायत रहम वाला है। आप फरमा दीजिए ऐ इन्सानो! यक़ीनन तुम्हारे पास

الْحَقُّ مِنْ رَّبِّكُمْ ۚ فَمَنِ اهْتَدٰى فَاِنَّمَا يَهْتَدِيْ

तुम्हारे रब की तरफ से हक़ आ चुका। अब जो हिदायत चाहे, तो उस की हिदायत अपनी ज़ात ही के

لِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ ضَلَّ فَاِنَّمَا يَضِلُّ عَلَيْهَا ۚ

लिए है। और जो गुमराही इखतियार करे तो उस का वबाल खुद उसी पर है।

وَمَآ اَنَا عَلَيْكُمْ بِوَكِيْلٍ ﴿١٠٨﴾ وَاتَّبِعْ مَا يُوْحٰٓى اِلَيْكَ

और मैं तुम पर मुसल्लत नहीं हूँ। और आप उस के पीछे चलिए जो आप की तरफ वही किया जा रहा है

وَاصْبِرْ حَتّٰى يَحْكُمَ اللّٰهُ ۚ وَهُوَ خَيْرُ الْحٰكِمِيْنَ ﴿١٠٩﴾ ع ١١

और आप सब्र कीजिए यहां तक के अल्लाह फैसला कर दे। और वो बेहतरीन फैसला करने वाला है।

اٰيَاتُهَا ١٢٣ (١١) سُوْرَةُ هُوْدٍ مَّكِّيَّةٌ (٥٢) رُكُوْعَاتُهَا ١٠

और १० रूकूअ हैं सूरह हूद मक्का में नाज़िल हुई उस में १२३ आयतें हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

الٓرٰ ۟ كِتٰبٌ اُحْكِمَتْ اٰيٰتُهٗ ثُمَّ فُصِّلَتْ مِنْ لَّدُنْ

अलिफ लाम रॉ। ये किताब है जिस की आयतें मुहकम की गई हैं, फिर उन की तफसील की गई है

حَكِيْمٍ خَبِيْرٍ ﴿١﴾ اَلَّا تَعْبُدُوْٓا اِلَّا اللّٰهَ ۭ اِنَّنِيْ لَكُمْ

हिक्मत वाले, बाखबर अल्लाह की तरफ से। के इबादत मत करो मगर अल्लाह ही की। यक़ीनन मैं तुम्हारे लिए

مِّنْهُ نَذِيْرٌ وَّبَشِيْرٌ ﴿٢﴾ وَّاَنِ اسْتَغْفِرُوْا رَبَّكُمْ

उस की तरफ से डराने वाला और बशारत सुनाने वाला हूँ। और ये के अपने रब से इस्तिग़फार करो,

ثُمَّ تُوْبُوْٓا اِلَيْهِ يُمَتِّعْكُمْ مَّتَاعًا حَسَنًا اِلٰٓى اَجَلٍ

फिर तुम उस की तरफ तौबा करो तो वो तुम्हें मुतमत्तेअ करेगा अच्छी तरह मुतमत्तेअ करना

مُّسَمًّى وَّيُؤْتِ كُلَّ ذِيْ فَضْلٍ فَضْلَهٗ ۭ

मुक़र्रर किए हुए वक्त तक और हर एक साहिबे फ़ज़्ल को अपना फ़ज़्ल (जज़ा) देगा।

وَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنِّيْٓ اَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ كَبِيْرٍ ﴿٣﴾

और अगर तुम ऐराज़ करो तो मुझे तुम्हारे ऊपर एक बड़े दिन के अज़ाब का खौफ है।

اِلَى اللّٰهِ مَرْجِعُكُمْ ۚ وَهُوَ عَلٰي كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٤﴾

अल्लाह की तरफ तुम्हें वापस जाना है। और वो हर चीज़ पर कुदरत वाला है।

اَلَآ اِنَّهُمْ يَثْنُوْنَ صُدُوْرَهُمْ لِيَسْتَخْفُوْا مِنْهُ ۭ

सुनो! यक़ीनन वो अपने सीनों को अल्लाह से छुपने के लिए मोड़ते हैं।

اَلَا حِيْنَ يَسْتَغْشُوْنَ ثِيَابَهُمْ ۙ يَعْلَمُ مَا يُسِرُّوْنَ

सुनो! जिस वक्त वो अपने कपड़े ओढ़े हुए होते हैं, तब भी अल्लाह जानता है उन चीज़ों को जिन्हें वो

وَمَا يُعْلِنُوْنَ ۚ اِنَّهٗ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ﴿٥﴾

छुपाते हैं और जिन्हें वो ज़ाहिर करते हैं। यक़ीनन वो दिलों के हाल को खूब जानने वाला है।